सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 11 ● अंक: 270 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 8 नवम्बर, 2025
मूल्य ₹ 3/-

हे मानव! तू क्या गर्व करता है? काल अपने हाथों में तेरे केश पकड़े हुए है। मालूम नहीं, वह घर या परदेश में कहाँ पर तुझे मार डाले।

-कबीर दास

महिला वनडे विश्वकप 2029 में... 7 | बिहार में बसपा भी दिखाएगी दम... 3 | ये मेलमिलाप है हमारी साझा विरासत... 2

सर बढ़ाएगा पूरे देश में सियासी सिरदर्द!

एसआईआर के खिलाफ दक्षिण से उत्तर तक उठी लहर

» विपक्ष ने चुनाव आयोग व एनडीए सरकार को घेरा
» तमिलनाडू से बिहार तक सुलगता विरोध
» सवालों के घेरे में केंद्र की नीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश में एक बार फिर एसआईआर को लेकर सियासी पारा चढ़ गया है। इस बार सबसे तीखा विरोध दक्षिण से उठ रहा है। तमिलनाडू, पश्चिम बंगाल और गोवा में एसआईआर के विरोध की आग धधकना शुरू हो गयी है और वहां की सरकारें और विपक्षी दलों ने केंद्र सरकार से टकराव का मूड बना लिया है। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी, तमिलनाडू के मुख्यमंत्री स्टालिन और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इसे संघीय ढांचे पर हमला बताकर राज्य व्यापी आंदोलन की घोषणा कर दी है।

तमिलनाडू के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने 11 नवम्बर से विरोध की अगुवाई करने का ऐलान किया है। बंगाल में ममता बनर्जी ने इसे बीजेपी की सियासी मदद करार दिया है जबकि गोवा में दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने एसआईआर की टाइमिंग पर सवाल उठाते हुए कहा है कि पंचायत चुनावों के साथ यह प्रक्रिया लोकतांत्रिक भ्रम पैदा कर रही है। उत्तर प्रदेश और बिहार में पहले से ही जनसंगठनों और विपक्षी दलों का विरोध चल रहा है। सवाल अब यह नहीं है कि एसआईआर का उद्देश्य क्या है बल्कि यह कि क्यों इसकी प्रक्रिया बार-बार जनता और राज्यों के बीच अविश्वास का कारण बन रही है।

स्टालिन की अगुवाई में द्रविड़ अस्मिता बनाम केंद्र

तमिलनाडू में एसआईआर के विरोध को द्रविड़ सम्मान आंदोलन का रंग दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने 11 नवम्बर से राज्यव्यापी विरोध की घोषणा की है। डीएमके का आरोप है कि केंद्र सरकार एसआईआर के नाम पर राज्यों की जनसांख्यिकीय संरचना और स्थानीय डाटा पर नियंत्रण चाहती है। राज्य में उद्योग संघ और व्यापारी संगठन भी इस विरोध में शामिल हैं। चेंगलपट्टू से लेकर मदुरै तक प्रदर्शन तय हैं। डीएमके नेताओं का कहना है कि तमिल पहचान के साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं की जाएगी। स्टालिन ने साफ कहा है कि यह कोई डाटा रजिस्ट्रेशन नहीं बल्कि लोकतंत्र का री-रजिस्ट्रेशन है।

आतिशी स्टालिन और ममता ने इसे संघीय ढांचे पर हमला बताकर राज्य व्यापी आंदोलन की घोषणा कर दी है

ममता का आरोप बीजेपी को मदद देने वाला हथकंडा

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एसआईआर को राजनीतिक एजेंडा बताते हुए केंद्र पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा है कि यह कोई रजिस्टर नहीं यह बीजेपी का चुनावी सर्वे है। राज्य के शहरी इलाकों में तृणमूल कांग्रेस ने नो टू एसआईआर अभियान शुरू किया है। ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग से भी सवाल किया कि जब राज्य में शहरी निकायों के चुनाव की प्रक्रिया जारी है तब एसआईआर का डाटा कलेक्शन कैसे शुरू हो सकता है? बंगाल में नागरिकता और पहचान का सवाल पहले ही संवेदनशील रहा है। एनआरसी और सीएए के विरोध के बाद अब एसआईआर इस विवाद को एक नया चेहरा दे रहा है।

फिर से ज़िंदा हो गयी पुरानी बहस

राजनीतिक रूप से देखा जाए तो एसआईआर ने भाजपा बनाम क्षेत्रीय दलों की पुरानी बहस को फिर से जिंदा कर दिया है। भाजपा इसे डाटा ट्रांसपेरेंसी और सिक्योरिटी का उपाय बता रही है। जबकि विपक्ष इसे नागरिक ट्रैकिंग और राज्य पर निगरानी का औजार मानता है। मामला केवल राजनीतिक नही भावनात्मक भी बन रहा है। तमिलनाडू में द्रविड़ अस्मिता, बंगाल में क्षेत्रीय स्वायत्तता, बिहार-यूपी में जातीय पहचान की राजनीति सब इसे अपने-अपने ढंग से देख रहे हैं।

उप्र में विपक्ष के लिए नया नारा

उत्तर प्रदेश में पहले से ही समाजवादी पार्टी और कांग्रेस एसआईआर के खिलाफ मोर्चा खोले हुए हैं। अखिलेश यादव ने कहा है कि सरकार जनता का डाटा नहीं जनता का भरोसा खो रही है। पूर्वी यूपी के कई जिलों में छात्र और पंचायत प्रतिनिधि इस मुद्दे पर

विरोध जता रहे हैं। भाजपा सरकार इसे सुधारात्मक डाटा अभ्यास बताती है लेकिन विपक्ष इसे निगरानी राज्य की दिशा में कदम बता रहा है। राजनीतिक दृष्टि से यह मुद्दा 2027 के विधानसभा चुनाव तक बड़ा विमर्श बन सकता है।

डाटा शुद्धिकरण या फिर लोकतंत्र में हस्तक्षेप

एसआईआर की घोषणा के बाद केंद्र सरकार ने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा और डाटा शुद्धिकरण की कवायद बताया था लेकिन राज्य सरकारें इसे राज्य की जनसांख्यिकी और नागरिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप मान रही हैं। मामला सिर्फ प्रशासनिक नहीं बल्कि संवैधानिक सीमाओं का भी है। क्या केंद्र किसी राज्य की सहमति के बिना इस तरह का रजिस्टर लागू कर सकता है? तमिलनाडू और बंगाल जैसे राज्य इसे सीधे संघीय अधिकारों पर अतिक्रमण बता रहे हैं। ममता बनर्जी ने कहा है कि यह एनआरसी और सीएए की ही नई शक्ल है। जबकि स्टालिन ने इसे राजनीतिक डाटा संग्रह करार दिया है। एसआईआर का विरोध इसलिए भी बढ़ रहा है क्योंकि कई राज्यों में इसका लागू होना चुनावी संवेदनशील समय में किया जा रहा है। गोवा और पश्चिम बंगाल में स्थानीय निकाय चुनाव, यूपी-बिहार में पंचायत पुनर्गठन, और तमिलनाडू में नागरिकता संबंधी चर्चाएं इन सबके बीच केंद्र की यह पहल सवालों के घेरे में है।

आतिशी का हमला पंचायत चुनावों में हस्तक्षेप का आरोप

गोवा में एसआईआर का विरोध अपेक्षाकृत नया है पर इसकी राजनीतिक गूंज तेज है। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने गोवा में प्रेस कान्फ्रेंस कर कहा कि एसआईआर की टाइमिंग संदिग्ध है। पंचायत चुनावों के साथ इसे लागू करना लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ है। गोवा में आम आदमी पार्टी और स्थानीय सामाजिक संगठन इसे प्रशासनिक निगरानी का औजार बता रहे हैं। छोटे राज्य होने के बावजूद गोवा में नागरिकता और पर्यावरण से जुड़े मुद्दे बेहद संवेदनशील हैं और एसआईआर को इन्हीं संदर्भों में देखा जा रहा है।

बिहार जातीय जनगणना के बाद नया विवाद

बिहार में एसआईआर को लेकर पहले से असंतोष है। वहां विपक्ष और सत्तारूढ़ गठबंधन दोनों के बीच मतभेद हैं। तेजस्वी यादव ने कहा कि जब जातीय जनगणना का डाटा सार्वजनिक नहीं हुआ है तो नया रजिस्टर क्यों? नीतीश कुमार की सरकार भी इस पर खुलकर कुछ नहीं कह रही पर प्रशासनिक सूत्रों का कहना है कि राज्य केंद्र की प्रक्रिया से अलग राह तलाश सकता है। बिहार में समाजिक और जातीय पहचान की राजनीति बहुत गहरी है और एसआईआर को इसी नजर से देखा जा रहा है।

ये मेलमिलाप है हमारी साझा विरासत है: अखिलेश

» आजम खां से मुलाकात के बाद सपा प्रमुख ने सोशल मीडिया पर लिखा भावुक पोस्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सपा के वरिष्ठ नेता आजम खान से मुलाकात के बाद सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक भावुक पोस्ट में कहा, न जाने कितनी यादें संग ले आए जब वो आज हमारे घर पर आए! ये जो मेलमिलाप है यही हमारी साझा विरासत है। हाल ही में ऐसी अटकलें लगाई जा रही थीं कि अखिलेश यादव के साथ कथित मतभेदों के चलते खान समाजवादी पार्टी छोड़ सकते हैं।

हालांकि खान ने ऐसा कोई भी कदम उठाने से साफ इनकार किया है। शुक्रवार की मुलाकात एक महीने में दोनों नेताओं के बीच दूसरी मुलाकात थी। इससे पहले आठ अक्टूबर को अखिलेश यादव आजम खान से मिलने रामपुर गए थे और बाद में कहा था कि अगर समाजवादी पार्टी सत्ता में लौटती है, तो खान और उनके जैसे अन्य लोगों के खिलाफ सभी झूठे मामले वापस ले लिए जाएंगे। अखिलेश यादव आजम खान से मिलने रामपुर गए थे और बाद में कहा था कि अगर समाजवादी पार्टी सत्ता में लौटती है, तो खान और उनके जैसे अन्य लोगों के खिलाफ सभी झूठे मामले वापस ले लिए जाएंगे।

समाजवादी पार्टी (सपा) के वरिष्ठ नेता आजम खान ने पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ अपने रिश्ते को राजनीति से परे बताते हुए इसे आधी सदी से भी ज़्यादा पुराना पारिवारिक संबंध बताया।

खान ने लखनऊ स्थित अखिलेश यादव के आवास पर उनसे मुलाकात के बाद कहा, इस घर से मेरा रिश्ता आधी सदी यानी 50 साल पुराना है। इसे कमजोर होने में वर्षों लगेंगे और टूटने में सदियां। मेरे पास भले ही सदियां न बची हों लेकिन यह रिश्ता अगली पीढ़ी के साथ बना रहेगा। उन्होंने कहा, यह एक ऐसा रिश्ता है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाता है। अगर कभी इस पर थोड़ी सी भी जंग लग जाती है, तो मैं इसे खुद साफ कर देता हूं। किसी और की जरूरत नहीं होती। समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य और पार्टी के दिवंगत संरक्षक मुलायम सिंह यादव के करीबी सहयोगी रहे आजम खां जमीन हड़पने, धमकी देने और बकरी चोरी सहित कई आपराधिक मामलों में लगभग दो साल जेल में बिताने के बाद हाल ही में जेल से रिहा हुए हैं।

2027 में आएगी बदलाव की लहर : आजम खां

सपा नेता ने आजम खां ने कहा कि विपक्ष अक्सर अपने राजनीतिक हितों को साधने वाली टिप्पणियों का सहारा लेता है; हर पार्टी की अपनी विचारधारा और मान्यताएँ होती हैं। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि 2027 में बदलाव की लहर आएगी और मैं उसका हिस्सा बनूँगा। आज़म खान ने अपने और अपने सहयोगियों के साथ हुए व्यवहार को अन्यायपूर्ण बताते हुए कहा- हमारे साथ जो अन्याय हुआ है, उस पर हम आपस में चर्चा करते हैं। मुझे उम्मीद है कि मेरे या किसी और जैसे अन्याय का सामना किसी और को न करना पड़े। हम अदालतों से न्याय और सभी एजेंसियों से निष्पक्षता चाहते हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उनके, उनके सहयोगियों और विश्वविद्यालय के साथ जो अन्याय हुआ है, वह किसी और के साथ नहीं होना चाहिए।

चर्चा पूरी तरह से पारिवारिक थी राजनीतिक नहीं : अब्दुल्ला आजम

समाजवादी पार्टी के साथ अपने निरंतर जुड़ाव पर जोर देते हुए खान ने कहा, हमने जीवन में पहले ही बहुत दर्द और अन्याय सहा है। इससे ज्यादा शायद ही कुछ हो। इतना सब कुछ सहने के बाद अब हम अलग क्यों हों? इस बैठक में अपने पिता आजम खान के साथ शामिल हुए पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम ने कहा, हम एक परिवार हैं। चर्चा पूरी तरह से पारिवारिक थी, राजनीतिक नहीं। परिवारों में जो बातें होती हैं उन पर सार्वजनिक रूप से चर्चा नहीं की जानी चाहिए।

बहुजन समाज के अधिकारों की लड़ाई जारी रहेगी: आकाश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के मद्देनजर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने शिवहर में अपनी ताकत का प्रदर्शन करते हुए एक विशाल जनसभा का आयोजन किया। इस मौके पर पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं संयोजक आकाश आनंद ने सभा स्थल पर पहुंचकर हजारों की भीड़ को संबोधित किया। उन्होंने जनता से बसपा उम्मीदवार मोहम्मद सरफुद्दीन को विजयी बनाने की अपील की।

» बसपा ने दिखाई बिहार में चुनावी ताकत

सभा को संबोधित करते हुए आकाश आनंद ने कहा कि बहुजन समाज पार्टी हमेशा वंचितों, दलितों और पिछड़े वर्गों के अधिकारों की लड़ाई लड़ती रही है। उन्होंने कहा कि बसपा का सिद्धांत बहुजन समाज के सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक मुक्ति पर केंद्रित है, जो डॉ. भीमराव अंबेडकर, महात्मा ज्योतिराव फुले और कांशीराम के विचारों से प्रेरित है। उन्होंने कहा कि बसपा का उद्देश्य सदियों से शोषित, वंचित और उपेक्षित समाज को राजनीतिक सत्ता में भागीदारी दिलाना और उनके सम्मान की रक्षा करना है। उन्होंने जनता से अपील की कि बसपा के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने के लिए पार्टी के उम्मीदवार को विधानसभा तक पहुंचाएं। इस मौके पर बसपा प्रत्याशी मोहम्मद सरफुद्दीन ने कहा कि उन्होंने पहले अन्य पार्टी में रहकर जनता की सेवा की, लेकिन वहां उन्हें सम्मान नहीं मिला। उन्होंने कहा कि अब मैंने बहुजन समाज पार्टी की विचारधारा को अपनाया है। आप मुझे जीताकर सदन में भेजें, मैं आपके विश्वास पर खरा उतरूंगा। सभा में मनोज कुमार सिंह, नेयाज अहमद उर्फ मोती बाबू, खलिकुर्र रहमान, आफताब आलम, जिला अध्यक्ष राम एकबाल राय क्रांति सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभा स्थल पर उमड़ी भीड़ से पूरा माहौल बसपा के रंग में रंग गया।

मेरी हत्या की साजिश रची जा रही है: जरांगे

» पूर्व मंत्री मुंडे का इनकार सीबीआई जांच की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने आरोप लगाया कि महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के विधायक धनंजय मुंडे ने उनकी हत्या की साजिश रची थी। मुंडे ने जरांगे के इस आरोप का खंडन करते हुए इस संबंध में दर्ज शिकायत की सीबीआई जांच कराने की मांग की।

जालना पुलिस के अनुसार, जरांगे के सहयोगी गंगाधर कलकुटे द्वारा इस सप्ताह की शुरुआत में सामाजिक कार्यकर्ता की हत्या की साजिश रचे जाने का आरोप लगाते हुए दर्ज कराई गई एक औपचारिक शिकायत की जांच के बाद दो लोगों को हिरासत में लिया गया है। जरांगे ने आरोप लगाया, ''धनंजय मुंडे ने मेरी हत्या की साजिश रची थी। कंचन नाम का एक व्यक्ति, जो मुंडे का निजी सहायक या उनकी जान-पहचान का है, हिरासत में लिए गए संदिग्धों में से एक को परली गेस्ट हाउस ले गया था, जहां मुंडे ने एक बैठक बुलाई थी और उनसे बात की थी। उन्होंने दावा किया कि उनके फर्जी वीडियो और रिकॉर्डिंग बनाकर उन्हें बदनाम करने या कुछ दवाओं का इस्तेमाल करके उन्हें मारने की चर्चा हुई थी। जरांगे ने आरोप लगाया कि बैठक के बाद संदिग्धों ने उन्हें खत्म करने के लिए 2.5 करोड़ रुपये में सौदा किया। उन्होंने साजिश में कम से कम 18 लोगों के शामिल होने का दावा किया और आरोप लगाया कि संदिग्धों ने मुंबई में मुंडे से भी मुलाकात की और वारदात को दुर्घटना दिखाने के लिए एक वाहन मांगा। इस बीच, मुंडे ने जरांगे के आरोपों को 'निराधार, दुर्भावनापूर्ण और राजनीति से प्रेरित' करार दिया और दावा किया कि उन्होंने सामाजिक कार्यकर्ता के खिलाफ कभी कुछ नहीं कहा। उन्होंने आरोप लगाया कि मामले के सिलसिले में हिरासत में लिए गए लोग खुद जरांगे से जुड़े थे। परली से राकांपा विधायक ने कहा कि वह मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से इस मामले में सीबीआई जांच का आदेश देने की अपील करेंगे।

आवारा कुत्तों पर सुप्रीम कोर्ट का आदेश क्रूर: प्रतीक यादव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों को सार्वजनिक स्थानों स्कूल-अस्पतालों से हटाकर उन्हें शेल्टर होम में शिफ्ट करने का आदेश दिया है जिस पर मुलायम सिंह यादव के छोटे बेटे और बीजेपी नेता अपर्णा यादव के पति प्रतीक ने तीखी प्रतिक्रि या दी है। उन्होंने इस फैसले को बेहद क्रूर और इंसानियत से परे बताया।

» शीर्ष कोर्ट पर भड़के अपर्णा यादव के पति

प्रतीक यादव ने लोगों से अपील की इस फैसले को वापस लिया जाए, जिस पहले सुप्रीम कोर्ट को पिछली बार अपने फैसले को रिवर्स करना पड़ा था। उन्होंने कहा कि कुत्तों को लेकर कोई भी फैसला देने से पहले इस पर रिसर्च करना चाहिए था कि कुत्ते कैसे रहते हैं? अगर इन कुत्तों को नई जगह शिफ्ट किया जाएगा तो वो मर जाएंगे। प्रतीक यादव ने एक वीडियो जारी कर सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर प्रतिक्रिया दी है। इसमें वो बीमार दिख रहे हैं और अस्पताल में भर्ती है. प्रतीक ने कहा कि स्ट्रे डॉग्स को लेकर आज फिर से एक फैसला आ गया है सुप्रीम कोर्ट का जो जज विक्रम नाथ, संदीप मेहता और एनवी अंजारिया ने दिया है और ये ऑनरेबल फैसला नहीं है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट को हमेशा ऑनरेबल कहकर एड्रेस किया जाता है लेकिन ये फैसला ऑनरेबल नहीं है। क्योंकि, इन्होंने फिर से एक बहुत ही गलत फैसला दे दिया है। इन्होंने फैसला दिया है कि जितने भी हाई एंड लोकेशन हैं वहां से स्ट्रे डॉग्स को उठाकर न्यूट्रल करके या तो किसी शेल्टर में डाला जाए और शेल्टर नहीं है तो वहां तो किसी लोकल एरिया में ऐसे ही छोड़ दिया जाए।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

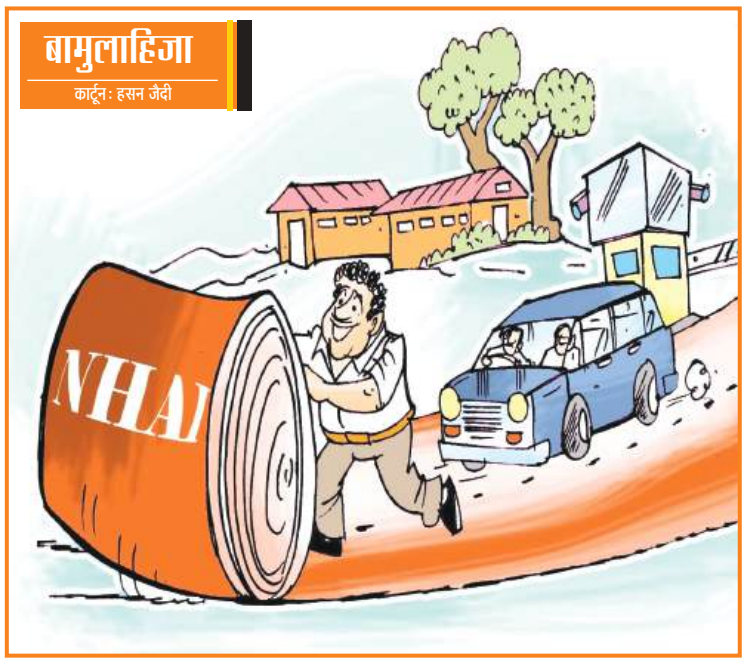

बिहार में बदलाव तय, बस वोट चोरी न हो: कन्हैया

» चुनाव आयोग पर कांग्रेस नेता का बड़ा सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के मतदान से सिर्फ दो दिन पहले, कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने शनिवार को विश्वास जताया कि राज्य में सत्ता परिवर्तन होने वाला है। साथ ही, उन्होंने मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं पर भी चिंता जताई।

हालाँकि, कुमार ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के वोट चोरी के आरोपों पर चिंता जताई और कहा कि अगर वोट चोरी नहीं होते, तो राज्य में सरकार बदल जाती, लेकिन अगर ऐसी प्रथाएँ जारी रहीं, तो मौजूदा सरकार सत्ता में बनी रहेगी। कन्हैया कुमार ने कहा कि इस बार, हम बिहार में बदलाव देखेंगे... वोट चोरी एक बड़ा मुद्दा है। अगर वोट चोरी नहीं हुए, तो सरकार बदल जाएगी, और अगर वोट चोरी हुए, तो वही सरकार चलती रहेगी। चुनाव आयोग को जवाब देना चाहिए कि ब्राज़ीलियाई मॉडल की पहचान वाले 22 वोट कैसे तैयार किए गए। इस बीच, कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने आरोप लगाया कि 6 नवंबर को हुए पहले चरण के मतदान के दौरान कई ऐसे मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए जो पीढ़ियों से वोट डालते आ रहे हैं। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई) पर हरियाणा में वोटों में हेराफेरी करने के लिए कथित तौर पर मिलकर काम करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हमें अपने कार्यकर्ताओं से शिकायतें मिलीं कि पीढ़ियों से वोट डालते आ रहे लोगों के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए। पूरे देश ने देखा कि बिहार में एसआईआर एक फ्लॉप शो था...भारत के चुनाव आयोग और भाजपा की मिलीभगत से हम हरियाणा में सरकार नहीं बना पाए और उन्होंने वोट चुरा लिए। इससे पहले, राहुल गांधी ने शुक्रवार को बिहार चुनाव में वोट चोरी का आरोप लगाया था और दावा किया था कि चुनाव सूचियों में फर्जी मतदाताओं के नाम शामिल किए गए हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और चुनाव आयोग पर हरियाणा चुनाव में मतदाता धोखाधड़ी कराने का आरोप लगाया था।

बिहार में बसपा भी दिखाएगी दम एनडीए होगा बेदम

अकेले दम पर चुनाव लड़ेगी मायावती की पार्टी

पहले दौर का मतदान खत्म, दूसरे दौर की तैयारी

- किस पर भारी पड़ेगी दलित वोटों की लड़ाई
- ओवैसी ने कसी कमर देंगे महागठबंधन को झटका
- मुस्लिम वोटों पर एआईएमआईएम की नजर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में पहले चरण का मतदान हो चुका है। जिसमें 121 सीटों के लिए उम्मीदवारों की किसमत ईवीएम में बंद हो गई। दूसरे चरण के लिए सियासी दल प्रचार में जुटे हैं। भाजपा, जदयू, राजद व कांग्रेस ने अपनी-अपनी जीत के दावे किए हैं। वहीं अकेले दम पर चुनाव लड़ने का ऐलान करके बहन मायावती ने जता दिया है कि उनका जोश अभी कम नहीं हुआ है।

हालांकि उन्होंने बिहार की जिम्मेदारी अपने भतीजे आकाश आनंद को दे दिया है पर वह वह वहां चुनाव प्रचार करने जा रही हैं। ऐसा माना जा रहा है कि वहां पर उनको सुनने के लिए भारी भीड़ जुटने वाली है। उनके इस ऐलान से विपक्षी दलों की नींदं उड़ी हुई है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में लगातार मायावती की पार्टी बहुजन समाज पार्टी पिछड़ती जा रही है। ऐसे में मायावती ने एक बार फिर अपनी राजनीतिक सक्रियता को बढ़ाया है। लगातार दलित वोट बैंक के छिटकने से परेशान बसपा अध्यक्ष ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिए अपनी रणनीति बनानी शुरूकर दी है। इस दौरान पार्टी ने सभी 243 विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार उतारने का ऐलान कर दिया है। हाल 2000 के विधानसभा चुनाव में 294 सीटों पर उम्मीदवार उतरे और 5 सीटें जीती। यह राज्य में बीएसपी की सबसे बड़ी जीत थी। फिर 2005 के चुनाव में पार्टी ने 283 सीटों पर कैंडिडेट्स उतारे और 2 सीटों पर जीत हासिल की। अक्टूबर 2005 के विधानसभा चुनाव में 212 सीटों पर उम्मीदवार उतारे और 4 सीटें जीती।

बिहार के दलित वोट बैंक को अपनी तरफ कर पाने में कामयाब होगी

ऐसे सवाल उठता है कि क्या मायावती बिहार के राजनीति मैदान से अपने भतीजे आकाश आनंद को फिर लॉन्च करने की तैयारी में हैं। वहीं एक अहम सवाल यह भी उठता है कि यूपी विधानसभा चुनाव में एक सीट पाने वाली बसपा क्या बिहार के दलित वोट बैंक को अपनी तरफ कर पाने में कामयाब होगी। उत्तर प्रदेश की राजनीति में लगातार बसपा पिछड़ती जा रही है। ऐसे में मायावती का प्रयास एक बार खुद को राष्ट्रीय स्तर का दलित नेता साबित करने का है। ऐसे में बिहार चुनाव उनके सामने एक बड़े मौके की तरह है।

बिहार में पार्टी का प्रदर्शन

बता दें कि साल 1990 में बहुजन समाज पार्टी ने बिहार विधानसभा के चुनावी मैदान में दस्तक दी थी। उस दौरान बिहार और झारखंड संयुक्त राज्य थे और बिहार विधानसभा सीटों की संख्या 324 थी। 1990 के विधानसभा चुनाव में बीएसपी ने 164 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। हालांकि पार्टी 0.7 फीसदी वोट शेयर के साथ किसी भी सीट पर जीत नहीं हासिल कर पाई थी। फिर साल 1995 के विधानसभा चुनाव में बीएसपी के उम्मीदवार 161 सीटों पर उतरे और 1.34 फीसदी वोट शेयर के साथ 2 सीटों पर जीत हासिल की थी। साल 2000 के विधानसभा चुनाव में 294 सीटों पर उम्मीदवार उतरे और 5 सीटें जीती। यह राज्य में बीएसपी की सबसे बड़ी जीत थी। फिर 2005 के चुनाव में पार्टी ने 283 सीटों पर कैंडिडेट्स उतारे और 2 सीटों पर जीत हासिल की। अक्टूबर 2005 के विधानसभा चुनाव में 212 सीटों पर उम्मीदवार उतारे और 4 सीटें जीती। साल 2010 और 2015 के विधानसभा चुनाव में पार्टी को 3.21 और 2.1 फीसदी वोट शेयर मिले, लेकिन कोई पार्टी कोई सीट नहीं जीत सकी। फिर साल 2020 के विधानसभा चुनाव में 80 सीटों पर पार्टी ने उम्मीदवार उतारे लेकिन 1.5 फीसदी वोट शेयर के साथ पार्टी 1 सीट जीत सकी।

बिहार चुनाव बसपा के लिए अहम

हालांकि बसपा के पास ऑप्शन की काफी ज्यादा कमी है। क्योंकि बिहार विधानसभा चुनाव के बाद यूपी में पंचायत चुनाव होने वाले हैं और उसके अगले साल विधानसभा चुनाव होंगे। लेकिन साल 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले बीएसपी अपने पार्टी कार्यकर्ताओं को बड़ा संदेश देने का प्रयास कर रही है। भले ही बिहार विधानसभा चुनाव में बसपा को एक भी सीट न मिले, लेकिन पार्टी का प्रयास 3 से 5 फीसदी वोट शेयर हासिल करना होगा। बता दें कि बिहार के सीमावर्ती जिलों में बसपा पार्टी का प्रभाव पहले भी दिखा है। बक्सर से गोपालगंज जैसे जिलों से कई बार पार्टी के विधायक चुनकर बिहार विधानसभा जाते दिखे हैं। ऐसे में बसपा पार्टी दलित वोट बैंक के सहारे एक बड़ा दांव खेलते नजर आ रही है।

2020 में पांच सीटों पर दर्ज की थी जीत

साल 2019 में पार्टी बिहार में बहुत ज्यादा मजबूत नहीं थी। लेकिन साल 2020 के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने 5 सीटों पर जीत दर्ज की थी। हालांकि बाद में पार्टी के 4 विधायक तोड़ लिए गए। लेकिन पार्टी का मानना है कि जिस लोगों ने जिताया वह आज भी एआईएमआईएम के साथ खड़े हैं। पार्टी का मानना है कि राज्य में मुसलमान और दलितों के साथ हकमारी हुई है। पार्टी नेताओं का मानना है कि दलितों और मुसलमानों पर अत्याचार के खिलाफ जितनी प्रखर आवाज ओवैसी और पार्टी उठाती है, उतना कोई अन्य दल आवाज नहीं उठाता है।

बिहार की सियासत में रोल

मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुसलमीन पार्टी बिहार में खासकर सीमांचल इलाके में उभरती हुई सियासी ताकत बन गई है। सीमांचल (किशनगंज, अररिया, पूर्णिया और कटिहार जैसे जिले) में मुस्लिम आबादी ज्यादा है। वहीं पार्टी ने भी इस इलाके में अपनी पकड़ मजबूत बनाई है। मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुसलमीन का फोकस रोजगार, शिक्षा, मुस्लिम समुदाय के मुद्दे और सामाजिक न्याय पर रहता है। वहीं ओवैसी भी अपनी बेबाक बयानबाजी और सांप्रदायिक ताकतों के खिलाफ आवाज उठाते हैं। बिहार में एआईएमआईएम महागठबंधन में शामिल हो सकती है। क्योंकि एआईएमआईएम ने कहा कि वह कम सीटों पर भी समझौता करने के लिए तैयार है। बस पार्टी की शर्त सिर्फ इतनी है कि उसे सीमांचल की अहम सीटें उसको मिलें। वहीं अगर महागठबंधन में पार्टी की बात नहीं बनती है कि तो पार्टी अकेले या फिर किसी तीसरे मोर्चे के साथ चुनाव लड़ सकती है। हालांकि ओवैसी ने पहले ही यह साफ कर दिया है कि उनकी पार्टी सीमांचल और उसके बाहर भी 50 सीटों से ज्यादा लड़ने की तैयारी में है। ओवैसी के इस फैसले से सियासी समीकरण बदल सकते हैं, क्योंकि एआईएमआईएम के लड़ने से मुस्लिम वोट बंट सकते हैं।

निर्णायक स्थिति में हैं मुस्लिम वोटर

बिहार में कुल 243 विधानसभा सीटें हैं, जिनमें से 47 सीटें ऐसी हैं, जहां पर मुस्लिम वोटर निर्णायक स्थित में हैं। इन इलाकों में 20-40 प्रतिशत या इससे भी अधिक मुस्लिम आबादी है। बिहार की 11 सीटें हैं, जहां पर 40 फीसदी से अधिक मुस्लिम मतदाता हैं। वहीं 7 सीटों पर मुस्लिम आबादी 30 फीसदी से ज्यादा हैं। वहीं 29 विधानसभा सीटों पर 20-30 फीसदी के बीच मुस्लिम आबादी है। सीमांचल इलाके में मुस्लिम समुदाय की आबादी 40-70 फीसदी के आसपास है। इसलिए ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम का सबसे ज्यादा इसी इलाके पर फोकस रहा है।

बड़ा खेला कर सकती है एआईएमआईएम

बिहार विधानसभा चुनाव में बड़ा खेला कर सकती है ओवैसी की एआईएमआईएम। साल 1936 में नवाब नवाज किलेदार ने एआईएमआईएम को शुरू किया था, जब हैदराबाद एक स्वतंत्र राज्य था और वहां पर नवाबों का शासन था। उस दौरान मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुसलमीन सिर्फ एक सांस्कृति अंग था। लेकिन बाद में मुस्लिम लीग से जुड़ गया और पूरी तरह से राजनीतिक संगठन में बदल गया था और फिर राजनीतिक पार्टी में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिममीन ने बिहार विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरूकर दी है। पार्टी के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी राज्य में विधानसभा चुनाव को लेकर तीसरा मोर्चा बनाने की तैयारी कर रहे हैं। बता दें कि बिहार में मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुसलमीन 100 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की इच्छुक है। ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम एक बार फिर से मुस्लिम बहुल सीटों और सीमांचल पर फोकस कर रही है। साल 2020 में पार्टी ने 5 सीटों पर जीत दर्ज की थी। वहीं इस बार पार्टी बिहार विधानसभा चुनाव में बड़ी भूमिका निभाने का दावा कर रही है। पार्टी की बागडोर ओवैसी परिवार के हाथ में उस समय आई, जब साल 1957 में इस संगठन से बैन हटाया गया था। साल 1957 में पार्टी ने नाम में ऑल इंडिया जोड़ा और साथ ही अपने संविधान को बदला।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

शोध और नवाचार पर हो विशेष जोर

वर्तमान में पूरे विश्व में तकनीकी का जोर है। दुनिया ग्लोबल विलेज बनती जा रही है। डिजिटलीकरण बढ़ता जा रहा है। ऐसे में भारत पर भी इसका असर हो रहा है। सरकार को शोध और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए? शोध और नवाचार के लिए मजबूत संस्थागत ढांचा, प्रभावी नीतियाँ और निजी भागीदारी आवश्यक हैं। अनुसंधान एवं विकास में निवेश बढ़ाया जाए और शिक्षा प्रणाली में नवाचार को प्रोत्साहन मिले, ताकि देश आत्मनिर्भर बने। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ नहीं होने से कई योग्य शोधकर्ता पात्रता से बाहर हो गए हैं। आयु सीमा बढ़ाई जाए और निजी संस्थानों में कार्यरत शोधकर्ताओं की क्षमताओं का मूल्यांकन किया जाए, ताकि प्रतिभाएं उपेक्षित न रहें। शोध और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए भारतीय दृष्टि से भारत का अध्ययन जरूरी है। भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित अकादमिक गतिविधियों से सृजनशील अनुसंधान और नए रोजगार अवसरों का सृजन होगा।

18 से 25 वर्ष के युवाओं को शोध और नवाचार के लिए प्रशिक्षण दिया जाए। एआई तकनीक के प्रयोग से कार्यक्षमता बढ़ेगी। जैसे मतदाता पुनरनिरीक्षण कार्य अब पूर्णत: तकनीकी आधारित है। विश्वविद्यालयों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा ढांचे को सुदृढ़ किया जाए। आरडीआई जैसी योजनाओं से निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन, प्रतिभा विकास, वित्तीय सहायता और बौद्धिक संपदा अधिकारों को मजबूती दी जाए। हालांकि ऑन लाइन का बढ़ना कुछ हानिकारक भी है। यह युवाओं को डिप्रेशन की ओर भेज रहा है। इस ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। वहीं आज के समय में स्कूलों में बच्चों पर पढ़ाई का दबाव स्वाभाविक रूप से बना हुआ है। हर बच्चा अव्वल आना चाहता है और अभिभावकों की भी यही अपेक्षा रहती है, लेकिन सभी का मानसिक विकास, समझ और रुचि समान नहीं होती। ऐसे में सभी पर एक समान दबाव डालना तनाव का कारण बनता है। बच्चों के मन की बात सुनें, उन्हें उनकी रुचि के अनुसार प्रोजेक्ट और गतिविधियाँ दें। कार्य को दबाव की बजाय प्रेरणा से करवाएं। उनकी झिझक, भय और उलझनों को समझें-सिर्फ ढ़ाई ही नहीं, बल्कि उनके भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी ध्यान दें। ऐसा वातावरण बनेगा तो उनका तनाव स्वत: कम होगा। बचपन से शोध को बढ़ावा मिलना चाहिए।

“ शोध और नवाचार के लिए मजबूत संस्थागत ढांचा, प्रभावी नीतियाँ और निजी भागीदारी आवश्यक हैं। अनुसंधान एवं विकास में निवेश बढ़ाया जाए और शिक्षा प्रणाली में नवाचार को प्रोत्साहन मिले, ताकि देश आत्मनिर्भर बने। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ नहीं होने से कई योग्य शोधकर्ता पात्रता से बाहर हो गए हैं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

स्वास्थ्य सेवाओं में लापरवाही का संकट

दीपिका अरोड़ा

नियम-मानकों की अनदेखी देश में एक गंभीर समस्या बन चुकी है। भारतीय चिकित्सा क्षेत्र तक लापरवाही से अछूता नहीं। हमारे उपचार केंद्र नागरिक-स्वास्थ्य के प्रति कितने संजीदा हैं, इसका ताजा उदाहरण झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले में चाईबासा के सदर अस्पताल में देखने को मिला। कथित तौर पर यहां थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों को एचआइवी संक्रमित रक्त चढ़ा दिया गया। मंझारी प्रखंड के रहने वाले पीड़ित बच्चे के परिजनों द्वारा शिकायत दर्ज कराने पर ही मामला प्रकाश में आया। परिजनों के आरोपानुसार, दीर्घकाल से थैलेसीमिया ग्रस्त सात वर्षीय बच्चा रक्त चढ़ाने के क्रम में एचआइवी से संक्रमित हुआ। झारखंड हाईकोर्ट द्वारा विषय का संज्ञान लेने के उपरांत राज्य सरकार हरकत में आई।

रांची से आई विशेष मेडिकल टीम की जांच में चार और बच्चे एचआईवी पॉजिटिव पाए गए। संख्या संभवत: बढ़ सकती है। रक्त दान, 'महादान' माना गया है चूंकि इसकी समयानुकूल उपलब्धता किसी को जीवनदान देने का सामर्थ्य रखती है। रक्त आधान प्रक्रिया रक्त हानि की भरपाई करने, रक्त कोशिकाओं के उत्पादन संबंधी समस्या ठीक करने अथवा दुर्घटना, सर्जरी आदि कुछ चिकित्सीय स्थितियों का इलाज करने हेतु प्रयुक्त की जाती है। सामान्य तौर पर, रक्त उत्पादों का सावधानीपूर्वक चयन तथा रखरखाव जोखिम को कम करता है जबकि इस संदर्भ में तनिक सी कोताही घातक सिद्ध हो सकती है। गलत खून चढ़ाने की घटनाएं गंभीर चिकित्सा लापरवाही (मेडिकल नेगलिजेंस) के मामले मानी जाती हैं, जिनके परिणामस्वरूप रोगी की शारीरिक क्षति या मृत्यु तक हो सकती है। इस संदर्भ में दिशानिर्देश बराबर सुनिश्चित करते हैं कि दान किया गया रक्त प्राप्तकर्ता के लिए उपयुक्त हो। विशेषज्ञों के अनुसार, प्राप्तकर्ता के शरीर में किसी गलत रक्त समूह का खून चढ़ाना बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। रक्त चढ़ाने के 24 घंटे के भीतर या आधान के समय उसे तीव्र हेमोलिसिस हो सकता है।

संक्रमित खून चढ़ाने से एलर्जी हो सकती है, जिसका प्रभाव आमतौर पर प्लाज्मा युक्त रक्त घटकों के आधान के दौरान या उसके तुरंत बाद देखा जा सकता है। रोगी का शरीर दान किए गए प्लाज्मा में मौजूद प्रोटीन के प्रति प्रतिक्रिया कर सकता है, जिसके लक्षण खुजली तथा पित्ती हो सकते हैं। अन्य लक्षणों में घरघराहट तथा सांस लेने में परेशानी हो सकती है। रक्त आधान के

माध्यम से संचारित होने में सक्षम वायरल एजेंटों में मानव इम्यूनोडेफिशिएंशी वायरस (एचआईवी), हेपेटाइटिस वायरस, वेस्ट नाइल वायरस (डब्ल्यूएनवी) शामिल हैं, हालांकि रक्त दाताओं और रक्त जांच संबंधी दिशानिर्देशों के मुताबिक, रक्त आधान से होने वाले एचआईवी और हेपेटाइटिस जैसे वायरल संक्रमण अत्यंत दुर्लभ हैं। अपने प्रकार की यह पहली घटना नहीं, इससे पूर्व भी ऐसे कई मामले सामने आ चुके हैं, जहां गलत खून चढ़ाने के गंभीर परिणाम देखने में आए। जबलपुर सरकारी अस्पताल में थैलेसीमिया पीड़ित 16 बच्चों में से कुछ को गलत रक्त चढ़ाने के कारण तीन बच्चों की मृत्यु हो गई थी एवं चार गंभीर रूप से बीमार पड़ गए थे। जोधपुर एम्स में एक 50 वर्षीय मरीज को अनुपयुक्त समूह का रक्त चढ़ाना उसकी मौत का सबब बना। कानपुर में गलत खून चढ़ा देने से एक महिला की किडनी फेल हो गई थी। भारत के सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, गलत खून चढ़ाना 'पेशेवर निर्णय की त्रुटि' न होकर, चिकित्सा लापरवाही का एक निश्चित उदाहरण है। चिकित्सा लापरवाही के मामलों में पीड़ित या उनके परिवार के पास दोषी के विरुद्ध आपराधिक या दीवानी शिकायत दर्ज करवाने जैसे कानूनी उपाय चुनने का विकल्प उपलब्ध है। आपराधिक मामलों में, भारतीय दंड संहिता की धारा 304ए के तहत 'लापरवाही से मृत्यु' के लिए दंड का प्रावधान है, जबकि दीवानी मामलों में उपभोक्ता फोरम या अदालतों के माध्यम से मुआवजे की मांग की जा सकती है। उल्लेखनीय है, उपरोक्त तीनों मामलों में, अस्पताल तथा संबंधित कर्मचारियों को जवाबदेह ठहराया गया और उन्हें कानूनी कार्रवाई तथा मुआवजे का सामना करना पड़ा लेकिन फिर भी घटनाओं का दोहराव न रुकना चिंता बढ़ाता है।

कुछ अधिकारियों को निलंबित करने मात्र से समस्या नहीं सुलझ सकती, समूल निराकरण हेतु हमें इसकी जड़ों तक पहुंचना होगा। पूरे सिस्टम में आमूल-चूल परिवर्तन करने के दावे केवल कागजी आश्वासन तक सीमित रहना ही घटनाओं की पुनरावृत्ति में प्रमुख कारण बनता है। जांच के दौरान प्रबन्धन संबंधी त्रुटियां सामने आने के बावजूद उनके सुधार के प्रति ईमानदार प्रयास करने की जहमत ही नहीं उठाई जाती।

भारतीय मूल के दो नेताओं की जीत से ट्रम्प की फजीहत

पुष्परंजन

न्यूयार्क शहर वर्ल्ड कैपिटल जैसी फीलिंग देता है। वहां से जब भी लौटा, साड्डी दिल्ली अर्द्ध शहरी और 'सबअल्टर्न' लगती है। इतालवी मार्क्सवादी दार्शनिक अंतोनियो ग्राम्शी ने 'सबअल्टर्न' शब्द को गढ़ते हुए इसका ध्यान रखा था, कि जो लोग ऐसे माहौल में रहते हैं, वो शहर कैसा होता होगा। दिल्ली गांव और शहर का मिक्सचर है। जिन्हें हम 'सबअल्टर्न' समझते हैं, वैसा 'अंडरक्लास' या 'मार्जिनलाइज्ड ग्रुप' यदि दिल्ली में है, तो उसके बरक्स दिल्ली, सत्ता के गलियारों में सशक्त लुटियन वालों से लैस भी दिखती है। न्यूयॉर्क शहर सबअल्टर्न नहीं, कैपिटल और स्टेट कंट्रोल का एक बड़ा ग्लोबल सेंटर है। इसी ग्लोबल कैपिटल में 34 साल के डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट जोहरान ममदानी ने मंगलवार को मेयर का चुनाव जीत लिया।

मेयर का चुनाव जीते जोहरान ममदानी कई कारणों से भारत-पाकिस्तान की मीडिया में चर्चा का विषय बन गए। अपनी विक्ट्री स्पीच में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के 15 अगस्त, 1947 की आधी रात को दिए गए 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' का जिक्र किया। भाषण के बाद वे अपनी पत्नी के साथ 'धूम मचा ले' गाने पर झूमते नजर आए। मां मीरा नायर ने मंच पर आकर उन्हें गले लगा लिया। मौके पर उनके पिता महमूद ममदानी भी मौजूद रहे। ममदानी, मानसून वेडिंग और सलाम बॉम्बे जैसी फिल्में डायरेक्ट करने वाली मीरा नायर के बेटे हैं। जोहरान के पिता महमूद ममदानी युगांडा के प्रसिद्ध लेखक, और भारतीय मूल के मार्क्सवादी विद्वान हैं। 'बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना' बना पाकिस्तान, केवल इस बात से प्रसन्न है, कि ममदानी मुसलमान हैं। न्यूयॉर्क शहर में ट्रम्प का साम्राज्य है। फिफ्थ एवेन्यू पर ट्रम्प टॉवर, एक मिक्स्ड-यूज स्काईस्क्रेपर है, जो ट्रम्प ऑर्गेनाइजेशन का हेडक्वार्टर है। यह लंबे समय तक डोनाल्ड ट्रम्प का घर भी रहा है। दूसरी प्रॉपर्टीज में सेंट्रल पार्क वेस्ट पर ट्रम्प इंटरनेशनल होटल एंड टॉवर, और ब्रॉन्क्स में एक पब्लिक गोल्फ कोर्स, फेरी पॉइंट पर ट्रम्प गोल्फ लिंक्स शामिल हैं।

ट्रम्प की भृकुटि जोहरान ममदानी की जीत से तनी हुई है। मतदान से पहले ट्रंप ने मतदाताओं को चेतावनी दी थी, कि ममदानी जैसे वामपंथी के सत्ता में आने से हालात और बदतर हो सकते हैं, और मैं राष्ट्रपति होने के नाते, खराब स्थिति में पैसा नहीं भेजना चाहता। देश चलाना मेरा दायित्व है, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर ममदानी जीत गए, तो न्यूयॉर्क शहर पूरी तरह से आर्थिक और सामाजिक रूप से तबाह हो जाएगा।' ट्रम्प को दरअसल, न्यूयॉर्क शहर की नहीं, अपनी तबाही की चिंता हो चली है। अमेरिका में मध्यावधि चुनाव, राष्ट्रपति के चार वर्षीय कार्यकाल के मध्य में होता है। 3 नवंबर 2026 को होने वाले मिड टर्म इलेक्शन में अमेरिका की प्रतिनिधि सभा की सभी 435 सीटों के साथ सीनेट की 100 में 33 या 34 सीटों का भविष्य तय होना है। मध्यावधि चुनावों के दौरान 36 गवर्नर चुने जाते हैं। तब तक नगरपालिकाओं और महापौर स्तर पर भी चुनाव हो चुके होते हैं। न्यूयार्क में डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट की जीत ऐसे समय में हुई जब बिजनेस एलीट, कंजर्वेटिव मीडिया कमेंटेटर्स, और खुद ट्रंप ने उनकी नीतियों और उनके मुस्लिम बैकग्राउंड पर जोरदार हमले किए थे।

चुनाव से ठीक पहले ट्रंप ने दखल देते हुए ममदानी को 'यहूदी विरोधी' कहा था। ममदानी ने अपनी जीत की स्पीच में कहा, 'उम्मीद जिंदा है। न्यूयॉर्क अब ऐसा शहर नहीं रहेगा जहां कोई इस्लामोफोबिया फैलाकर चुनाव जीत सके। यह शहर, राजनीतिक अंधेरे के इस कालखंड में एक रोशनी बनेगा।' उन्होंने एक ऐसे सिटी हॉल का वादा किया, 'जो यहूदी न्यूयॉर्कर्स के साथ मजबूती से खड़ा रहेगा, और एंटी-सेमिटिज्म की बुराई के खिलाफ लड़ाई में पीछे नहीं हटेगा, जहां दस लाख से ज्यादा मुसलमानों को पता होगा कि वे यहीं के हैं।'

इस बीच, वर्जीनिया में डेमोक्रेट एबिगेल स्पैनबर्गर ने गवर्नर का चुनाव आसानी से जीत लिया, और वह इस पद पर चुनी जाने वाली पहली महिला बन गईं, जबकि डेमोक्रेट गजाला हाशमी ने मंगलवार को वर्जीनिया लेफ्टिनेंट गवर्नर की दौड़ में रिपब्लिकन लेखक और कंजर्वेटिव टॉक शो होस्ट जॉन रीड को हराया, जिससे वह पहली दक्षिण एशियाई और पहली मुस्लिम महिला बन गईं। भारत के हैदराबाद में जन्मी हाशमी अपनी जवानी में अमेरिका चली गईं, और बाद में एमोरी यूनिवर्सिटी से इंग्लिश में पीएच.डी. की डिग्री हासिल की। न्यूयार्क से लगे न्यू जर्सी में भी डेमोक्रेट मिकी शेरिल ने गवर्नर की रेस जीत ली।

इन परिणामों से यह साफ सन्देश गया है कि ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी की हालत दिनों दिन खराब होती जा रही है। पिछले साल ट्रंप की जीत के बाद से, डेमोक्रेट्स राजनीतिक अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष कर रहे हैं। इन परिणामों ने परेशान और हाशिये पर जा चुकी डेमोक्रेटिक पार्टी को 2026 के मिडटर्म चुनावों के वास्ते कैंपेन प्लेबुक का टेस्ट करने का मौका दे दिया। ट्रम्प की हालत खिसियानी बिल्ली वाली हो गई है। ट्रंप ने कुछ पोलस्टर्स का हवाला दिया, जिन्होंने हार का कारण सरकारी शटडाउन, और ट्रंप का बैलेट पर नाम न होना बताया। अमेरिका की सेंटर स्टेज राजनीति में ममदानी का अप्रत्याशित उदय डेमोक्रेटिक पार्टी में एक सेंट्रिस्ट या लेफ्टिस्ट भविष्य को लेकर चल रही बहस को दर्शाता है, जिसमें कुछ प्रमुख राष्ट्रीय हस्तियों ने वोटिंग से पहले ममदानी का सिर्फ हल्का-फुल्का समर्थन किया था। सिराक्यूज यूनिवर्सिटी के पॉलिटिकल साइंस के प्रोफेसर ग्रांट रीहर ने नतीजे से पहले कहा था, कि ममदानी को एक मुश्किल लड़ाई का सामना करना पड़ेगा।

डायबिटीज करे कंट्रोल

यह पाचन और एंडोक्रोइन सिस्टम को सुधारता है, जिससे डायबिटीज जैसे रोगों में राहत मिलती है। डायबिटीज के मरीजों को इस आसन का नियमित अभ्यास करना चाहिए। महिलाओं के लिए भी यह आसन असरदार है।

अभ्यास का तरीका

गोमुखासन करना काफी आसान है। इसे हर कोई आसानी से कर सकता है। इसके लिए सबसे पहले समतल जगह पर चटाई बिछाकर बैठ जाएं। उसके बाद दाएं पैर को मोड़कर बाएं नितंब के पास रखें। फिर अब बाएं पैर को मोड़कर दाएं पैर के ऊपर रखें, उसके बाद दोनों घुटने एक के ऊपर एक होने चाहिएं। फिर दाहिने हाथ को ऊपर उठाकर पीछे की ओर मोड़ें और बाएं हाथ को नीचे से घुमाकर पीछे ले जाएं। अब दोनों हाथों की उंगलियां आपस में मिलाएं और पीठ के पीछे लेकर जाकर जकड़ें। फिर छाती को तानते हुए पीठ सीधी रखें और सामान्य रूप से सांस लेते रहें। इस स्थिति में कम से कम 30 सेकंड से 1 मिनट तक रहें, फिर यही प्रक्रिया को पैर और हाथ बदलकर दोहराएं। यह आसन पीठ और कंधों की जकड़न दूर करता है और छाती को फैलाने में मदद करता है।

गोमुखासन

घुटनों और जोड़ों के दर्द का रामबाण इलाज

योग भारत की प्राचीन परंपरा है, जो न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है बल्कि मानसिक शांति भी देता है। ऐसा ही एक शक्तिशाली योगासन है गोमुखासन। संस्कृत शब्द 'गोमुख' का अर्थ होता है, गाय का मुख। इस आसन को करते वक्त शरीर की स्थिति गाय के मुख जैसी लगती है, इसलिए इसका नाम गोमुखासन रखा गया है। यह आसन मुख्यतः पीठ, कंधे, छाती और जांघों की मांसपेशियों पर काम करता है और शरीर में लचीलापन बढ़ाता है। जो लोग जोड़ों के दर्द से परेशान हैं, उनके लिए यह योगासन बहुत फायदेमंद है। गोमुखासन के अभ्यास से गठिया रोग से राहत मिलती है।

जोड़ों के दर्द में राहत

इस आसन का अभ्यास रीढ़ और कूल्हों की लचीलापन बढ़ाता है जिससे पीठ दर्द में राहत मिलती है। घंटों डेस्क वर्क करने वालों के लिए यह आसन रामबाण उपाय है, पोस्चर में सुधार और पीठ व कमर दर्द से राहत मिलता है। इसके अलावा इस आसन को करने से जोड़ों में दर्द से भी काफी राहत मिलती है।

सावधानियां

वैसे तो गोमुखासन काफी फायदेमंद है लेकिन अगर शरीर में कुछ समस्याएं है जैसे कंधों, घुटनों या रीढ़ की हड्डी में कोई गंभीर चोट है तो यह आसन डॉक्टर की सलाह से ही करें। शुरुआत में योग शिक्षक की निगरानी में अभ्यास करना बेहतर होगा। इसके अलावा जो महिलाएं गर्भवती हैं, उन्हें इस आसन का अभ्यास न करने की सलाह दी जाती है।

तनाव कम करे

गोमुखासन के नियमित अभ्यास से ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है, जिससे मन शांत होता है और मानसिक तनाव कम होता है।

हंसना मना है

एक लड़का अपनी आयु के हिसाब से कुछ अधिक ही होशियार था। एक दिन वह लाइब्रेरी से 'बच्चों का पालन-पोषण की पुस्तक लाया।' मां ने पूछा- 'क्यों मुन्ने, इस पुस्तक का आप क्या करोगे? मुन्ना बोला-'मैं इसे पढ़कर ये जानना चाहता हूं कि मेरा पालन-पोषण उचित ढंग से किया जा रहा है की नहीं।'

दो शेर जंगल में बैठे थे, पास से एक खरगोश गुजरा, आहट सुनकर एक शेर ने दूसरे से पूछा-क्या है? कुछ नहीं, फास्ट फूड है!

रमेश पैराशूट बेच रहा था, हवाई जहाज से कूदो, बटन दबाओ और जमीन पर सुरक्षित पहुंच जाओ, ग्राहक- अगर पैराशूट नहीं खुला तो, रमेश- तो पैसे वापिस?

गांव की एक लड़की से कंप्यूटर क्लास में पूछा गया- डाटा क्या होता है? लड़की बोली so simple.. तेल की शीशी के ढक्कण को डाटा कहते हैं?

ज्योंतिषी (रीता से)-'अच्छा, तो तुम खुद प्रेमी का आनेवाला कल जानना चाहती हैं? रीता-'जी नहीं, उसका आनेवाला कल तो मेरे हाथ में है। तुम उसके अतीत के बारे में बताओ।

कहानी | लालची लकड़हारा

सोहनपुर गांव में रामलाल नाम का एक लकड़हारा रहता था। वो जंगल से रोज लकड़ियां चुनता और उन्हें बेचकर कुछ पैसे कमा लेता था। कुछ दिनों के बाद रामलाल की शादी हो गई। उसकी पत्नी बड़ी खर्चीली थी। इसलिए, अब उतनी लकड़ियों को बेचकर घर चलाना मुश्किल हो गया था। ऊपर से रामलाल की पत्नी कभी नए कपड़े खरीदने के लिए, तो कभी किसी दूसरी चीजों के लिए रामलाल से बार-बार पैसे मांगती थी। रामलाल उसकी नाराजगी वो बर्दाश्त नहीं कर पाता था। रामलाल ने ठान लिया कि वो अब ज्यादा लकड़ियां इकट्ठा करके बेचेगा। आज रामलाल घने जंगल तक चला गया और बहुत सारी लकड़ियां चुनकर बाजार में बेच दीं। ज्यादा लकड़ियों के ज्यादा पैसे मिले, तो खुश होकर रामलाल ने सारे पैसे अपनी पत्नी को दे दिए। अब रोज रामलाल ऐसा ही करने लगा। देखते-ही-देखते वह पेड़ काटना भी शुरू कर दिया। इससे अधिक दाम मिलने लगे। लकड़हारा हर हफ्ते एक पेड़ काटता और लकड़ियां बेचकर मिलने वाले पैसों से अपनी पत्नी के शौक पूरे करता। अब पैसे ज्यादा आ रहे थे, धीरे-धीरे रामलाल ने पैसों को जुए में लगाना शुरू कर दिया। जुआ खेलने की लत ऐसी लगी कि रामलाल एक मोटी रकम इसमें हार गया। अब इस रकम को चुकाने के लिए रामलाल ने एक-दो मोटे-मोटे पेड़ काटने का फैसला लिया। जैसे ही रामलाल ने जंगल में जाकर अपनी कुल्हाड़ी को एक बड़े से पेड़ पर चलाने की कोशिश की, तो उसपर पेड़ की टहनी ने हमला कर दिया। रामलाल चौंक गया। फिर उसे पेड़ की एक टहनी ने लपेट लिया। तभी पेड़ से आवाज आई। मूर्ख, तू अपने लालच के चक्कर में मुझे काट रहा है। तू सारे पैसे जुए में लुटा देता है और फिर पैसे लौटाने के लिए पेड़ काटने आ जाता है। हमारे अंदर भी जान बसती है और हम तुम इंसानों को जीने के लिए हवा, धूप में छाया, और भूख को शांत करने के लिए फल देते हैं। लेकिन, तू अपने स्वार्थ के लिए हमें ही काट रहा है। पेड़ ने कहा, आज तू रूक, यही कुल्हाड़ी मैं अब तेरे ऊपर चलाऊंगी। पेड़ की टहनी कुल्हाड़ी से रामलाल पर वार करने ही वाली थी कि वह गिड़गिड़ाने लगा। उसने माफ़ी मांगते हुए कहा, मुझसे गलती हुई है, लेकिन मुझे सुधरने का एक मौका दो। अगर आप मुझे मार दोगे, तो मेरी पत्नी का क्या होगा? वो अकेली पड़ जाएगी। आज से मैं किसी पेड़ को नहीं काटूंगा, यह प्रण लेता हूं। यह सब सुनकर पेड़ को रामलाल के ऊपर दया आ गई। उसने रामलाल को छोड़ दिया। छूटते ही रामलाल भागकर अपने घर गया और पैसों के लालच में न आने का संकल्प ले लिया।

7 अंतर खोजें

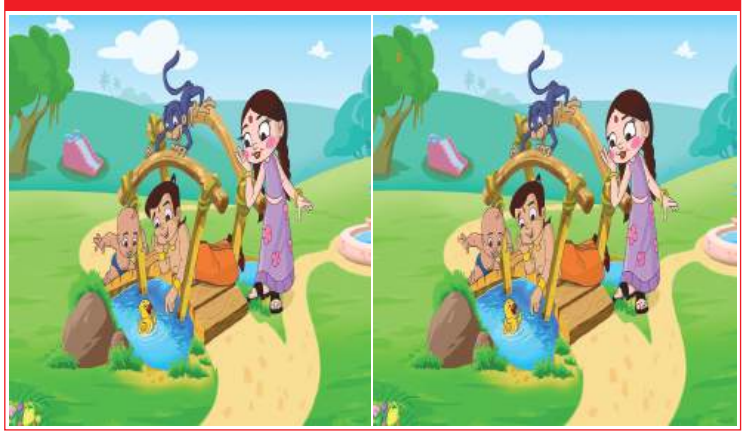

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

निवेश के सुखद परिणाम आएंगे। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। किसी बड़ी बाधा के दूर होने से प्रसन्नता रहेगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे।

वृषभ

कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बनी रहेगी। व्यस्तता रहेगी। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। कार्य में विलंब होगा।

मिथुन

व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। भाग्य का साथ रहेगा। व्यापार में वृद्धि के योग हैं। निवेश शुभ रहेगा।

कर्क

कारोबार में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। नए व्यापारिक अनुबंध होंगे। धनार्जन होगा। लंबे समय से रुके कार्यों में गति आएगी। नई योजना बनेगी।

सिंह

कोर्ट व कचहरी के कार्य अनुकूल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। परिवार के साथ समय अच्छा व्यतीत होगा। आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल रहेंगे।

कन्या

धनलाभ के अवसर प्राप्त होंगे। आय में निश्चितता होगी। ऐश्वर्य पर व्यय होगा। वाहन व मशीनरी आदि के प्रयोग में सावधानी रखें, विशेषकर स्त्रियां रसोई में ध्यान रखें।

तुला

कोर्ट व कचहरी के कार्य मनोनुकूल रहेंगे। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। सुख के साधन जुटेंगे। कारोबार में वृद्धि होगी। निवेशादि शुभ रहेंगे। अज्ञात भय रहेगा।

वृश्चिक

आय में वृद्धि होगी। भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी। कोई बड़ा लाभ हो सकता है। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। भाग्य बेहद अनुकूल है, लाभ लें।

धनु

भागदौड़ रहेगी। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी।

मकर

आज लेन-देन में विशेष सावधानी रखें। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। दु:खद समाचार मिल सकता है। किसी व्यक्ति से बेवजह विवाद हो सकता है।

कुम्भ

पराक्रम बढ़ेगा। आय में वृद्धि होगी। पराक्रम बढ़ेगा। किसी बड़े काम को करने में रुझान रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रशंसा प्राप्त होगी। प्रयास सफल रहेंगे।

मीन

आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। विवेक से कार्य करें। विरोधी सक्रिय रहेंगे। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। घर में मेहमानों का आगमन होगा।

पहले ही दिन उम्मीद से काफी कम परफॉर्म की फिल्म जटाधरा

सोनाक्षी सिन्हा की फिल्म 'जटाधरा' आखिरकार सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। रिलीज के पहले ही दिन फिल्म ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचा और बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाई। सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक फिल्म ने पहले दिन सिर्फ 37 लाख रुपये कमाए हैं। वीकेंड पर फिल्म की कमाई में सुधार हो सकता है। हालांकि फिलहाल फिल्म ने उम्मीद से काफी कम परफॉर्म किया है। फिल्म की सबसे मजबूत पकड़ तेलुगु मार्केट में देखने को मिली, जहां कुल ओक्यूपेंसी 16.41 प्रतिशत दर्ज की गई। सुबह के शो में भीड़ कम थी, लेकिन दोपहर और शाम के शोज में दर्शकों की संख्या बढ़ी। वहीं हिंदी बेल्ट में स्थिति उतनी मजबूत नहीं रही। देशभर में हिंदी वर्जन की औसत ओक्यूपेंसी केवल 5.28 प्रतिशत रही। मुंबई, दिल्ली-एनसीआर और पुणे जैसे मेट्रो शहरों में दर्शकों की संख्या सीमित रही, जबकि अहमदाबाद

(9.33प्रतिशत) और बेंगलुरु (10.33प्रतिशत) ने थोड़ा बेहतर प्रदर्शन दिखाया।

'जटाधरा' की रिलीज के साथ कई अन्य फिल्में भी सिनेमाघरों में मौजूद हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा कड़ी हो गई है। इसके बावजूद सुधीर बाबू की स्टार पावर और तेलुगु फैंस के समर्थन ने फिल्म को थोड़ी बहुत राहत जरूर दी है। फिल्म का पहला दिन भले ही साधारण रहा, लेकिन पब्लिक रिव्यूज और सोशल मीडिया पर फिल्म के कंटेंट को लेकर सकारात्मक चर्चा हो रही है। निर्देशक अभिषेक जायसवाल के निर्देशन में बनी इस फिल्म में सुधीर बाबू और सोनाक्षी सिन्हा के साथ शिल्पा शिरोडकर, इंदिरा कृष्णन, रवि प्रकाश, राजीव कनकला और सुभलेखा सुधाकर जैसे सशक्त कलाकार नजर आए हैं। फिल्म का कथानक पौराणिकता और आधुनिक एक्शन का मिश्रण है, जिसमें एक रहस्यमयी किरदार जटाधरा की यात्रा को दिखाया गया है। कहानी में एक्शन, इमोशन और मिथोलॉजिकल टच का संतुलन इसे बाकी फिल्मों से अलग बनाता है।

जल्द ही रिश्तों के रहस्य उजागर करने आ रहीं राधिका आप्टे

ओटीटी पर रिलीज होने को तैयार है साली मोहब्बत

बॉलीवुड | गपशप

राधिका आप्टे अपनी अलग अदाकारी के लिए जानी जाती हैं। वह इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म साली मोहब्बत को लेकर सुर्खियों में हैं। यह फिल्म जल्द ही ओटीटी पर रिलीज होने वाली है। इसे पहले आईएफएफआई गोवा में और शिकागो साउथ एशियन फिल्म फेस्टिवल में दिखाया जा चुका है।

यह फिल्म एक छोटे शहर की गृहिणी स्मिता की कहानी है। उसका शांत और सरल जीवन तब बिखरने लगता है जब उससे जुड़े कई रहस्य उजागर होने लगते हैं। फिल्म साली मोहब्बत में बेवफाई और धोखे जैसे विषय दिखाए गए हैं। फिल्म जल्द ही जी5 पर रिलीज होने वाली है।

टिस्का चोपड़ा ने वैरायटी को फिल्म के बारे में बताते हुए कहा, मैं हमेशा से रिश्तों की सतह के नीचे मौजूद शांत तनावों को जानने में दिलचस्पी रखती हूं। उन चीजों को भी जानने की इच्छुक रही हूं, जिनसे प्यार किसी गहरे अंधेरे में बदल सकता है।

टिस्का चोपड़ा ने आगे कहा कि फिल्म का निर्देशन करने से उन्हें महिला फिल्म निर्माताओं के लिए बनाई गई सीमाओं से आगे बढ़ने का मौका मिला।

टिस्का चोपड़ा के निर्देशन में बनने वाली इस फिल्म में राधिका आप्टे के अलावा दिव्येंदु शर्मा, अनुराग कश्यप, अंशुमान पुष्कर, सौरसेनी मैत्रा और शरत सक्सेना हैं। फिल्म का प्रोडक्शन जियो स्टूडियोज और मनीष मल्होत्रा के स्टेज-5 प्रोडक्शन ने किया है। राधिका आप्टे ने साल 2005 में वाह! लाइफ हो तो ऐसी फिल्म से बॉलीवुड में कदम रखा था। 2024 में वह फिल्म सिस्टर मिडनाइट में नजर आई थीं। इसके बाद वह 2025 में अमेरिकन फिल्म लास्ट डेज में नजर आईं।

बॉलीवुड | अपकमिंग

हॉलीवुड में कदम रखने जा रहीं श्रद्धा कपूर, डिज्नी ने किया ऐलान

श्रद्धा कपूर अब एनिमेशन की दुनिया में कदम रखने जा रही हैं। डिज्नी की सुपरहिट एनिमेटेड फ्रेंचाइजी जूटोपिया का सीक्वल जल्द ही सिनेमाघरों में दस्तक देने वाला है और इसमें जूडी हॉप्स नाम की प्यारी लेकिन जांबाज खरगोश पुलिस ऑफिसर को अब हिंदी में श्रद्धा अपनी आवाज देने वाली हैं। यह फिल्म 28 नवंबर को भारत में रिलीज होगी और डिज्नी इंडिया ने इस नई शुरुआत की घोषणा सोशल मीडिया पर करते हुए फैंस को बड़ा सरप्राइज दिया है। श्रद्धा कपूर अब तक अपनी फिल्मों में अभिनय के लिए जानी जाती रही हैं, लेकिन इस बार वह पूरी तरह से एक अलग अंदाज में दर्शकों से जुड़ेंगी। डिज्नी ने अपने आधिकारिक पेज पर श्रद्धा का एक पोस्टर जारी किया है जिसमें वह जूडी हॉप्स के साथ नजर आ रही हैं। श्रद्धा ने भी पोस्ट शेयर करते हुए लिखा- बहुत ज्यादा एक्साइटेड हूं 'जूटोपिया 2' फैमिली का हिस्सा बनने के लिए। जूडी हॉप्स जैसी एनर्जेटिक, बहादुर और क्यूट कैरेक्टर को अपनी आवाज देना मेरे लिए एक सपने जैसा है। श्रद्धा के इस संदेश के बाद सोशल मीडिया पर उनके फैंस खुशी से झूम उठे हैं। कई यूज़र्स ने लिखा कि श्रद्धा की आवाज़ इस किरदार में बिल्कुल फिट बैठेगी क्योंकि उनकी आवाज़ में वही जोश और मासूमियत है जो जूडी हॉप्स के व्यक्तित्व में झलकती है। 'जूटोपिया 2' में एक बार फिर जूडी हॉप्स और उनके साथी निक वाइल्ड जूटोपिया नाम के रंगीन और विविधता भरे शहर में नई चुनौतियों और रहस्यों का सामना करते नज़र आएंगे। फिल्म का निर्देशन जारेड बुश और जोसी ट्रिनिडैड ने किया है। यह सीक्वल पहले हिस्से की तरह ही समाज, साहस और समानता के मुद्दों को मज़ेदार और भावनात्मक अंदाज में पेश करेगा। पहली फिल्म 'जूटोपिया' को दुनिया भर में बेहतरीन रिस्पॉन्स मिला था। 2016 में आई उस फिल्म ने न सिर्फ ऑस्कर जीता बल्कि बॉक्स ऑफिस पर भी शानदार कमाई की थी। यही वजह है कि सीक्वल को लेकर दर्शकों की उम्मीदें आसमान छू रही हैं।

काला या हरा नहीं, हमेशा लाल कालीन पर ही क्यों चलते हैं वीआईपी? पीछे है धांसू कारण!

क्या आपने कभी सोचा है कि जब कोई नेता, सेलिब्रिटी या वीआईपी किसी बड़े इवेंट में आता है, तो हमेशा उसके स्वागत के लिए लाल कालीन ही क्यों बिछाई जाती है? न नीली, न हरी, सिर्फ लाल ही क्यों? असल में, यह सिर्फ एक कालीन नहीं, बल्कि सम्मान, शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रतीक है। इसकी कहानी हजारों साल पुरानी है, जो इतिहास, परंपरा और रॉयल ठाठ से जुड़ी हुई है रिपोर्ट्स के मुताबिक, लाल कालीन का सबसे पुराना जिक्र 458 ईसा पूर्व में किया गया था। ग्रीक नाटककार ईसकलस ने अपने मशहूर नाटक Agamemnon में पहली बार इसका उल्लेख किया था। कहानी में दिखाया गया कि जब राजा अगामेम्नन युद्ध जीतकर लौटता है, तो उसके स्वागत में लाल कालीन बिछाई जाती है। लेकिन उस समय लाल कालीन को देवताओं के लिए आरक्षित माना जाता था। जब राजा उस पर चलता है, तो यह अहंकार और अपमान का प्रतीक माना जाता है, जिसके कारण अंत में उसकी मौत हो जाती है। इससे साफ हो जाता है कि प्राचीन काल में लाल कालीन 'दैवीय शक्ति' का प्रतीक थी, जो इंसान और देवता के बीच की सीमाओं को दिखाती थी। इतिहास के रिकॉर्ड बताते हैं कि 1821 में अमेरिकी राष्ट्रपति जेम्स मुनरो के स्वागत में पहली बार औपचारिक रूप से रेड कार्पेट बिछाई गई थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, भारत में रेड कार्पेट का जिक्र 1911 के दिल्ली दरबार में मिलता है, जब वायसरॉय लॉर्ड हार्डिंगे ने किंग जॉर्ज और क्वीन मैरी के स्वागत के लिए लाल कालीन बिछवाई थी। तब से लेकर आज तक, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन और विदेशी मेहमानों के स्वागत में रेड कार्पेट बिछाना सम्मान और परंपरा का हिस्सा बना हुआ है। अब यह सिर्फ कालीन नहीं, एक 'ग्लैमर स्टेज' है। आज रेड कार्पेट सिर्फ स्वागत का तरीका नहीं, बल्कि ग्लैमर और पहचान का मंच है। ऑस्कर, कांस, फिल्मफेयर या किसी भी बड़े अवॉर्ड शो में सेलिब्रिटीज रेड कार्पेट पर चलते हैं ताकि वे अपने स्टाइल, डिजाइनर ड्रेसेस और पर्सनालिटी को दिखा सकें। यह एक मोमेंट ऑफ प्राइड होता है, जहां हर कदम कैमरों में कैद होकर सोशल मीडिया पर ट्रेंड बन जाता है।

अजब-गजब | भारत का ऐसा चमत्कारी स्टेशन

इस स्टेशन पर चारों दिशाओं से आती हैं ट्रेनें, मगर कभी नहीं होती टक्कर!

आज भारतीय रेलवे सिर्फ एक परिवहन व्यवस्था नहीं, बल्कि देश की धड़कन है। हर सुबह जब लाखों ट्रेनें पटरी पर दौड़ती हैं, तो पूरा भारत जैसे एक लय में चलता नजर आता है। कोई काम पर जा रहा होता है, कोई सफर पर, तो कोई अपने प्रियजनों से मिलने और इन सभी को जोड़ती है भारतीय रेलवे। यही वजह है कि इसे देश की लाइफलाइन कहा जाता है, क्योंकि यह न सिर्फ लोगों को जोड़ती है, बल्कि भावनाओं, संस्कृतियों और सपनों को भी एक साथ जोड़ने का काम करती है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि अगर चार दिशाओं से ट्रेनें एक साथ एक ही जगह पर आ जाएं, तो क्या होगा? सुनने में तो यह बेहद खतरनाक लगता है, लेकिन हैरानी की बात यह है कि भारत में एक ऐसा चमत्कारी स्टेशन है, जहां चारों दिशाओं ट्रेनें आती हैं, फिर भी कभी कोई टक्कर नहीं होती।

दरअसल, महाराष्ट्र के नागपुर रेलवे स्टेशन भारत के सबसे व्यस्त और अनोखे रेलवे जंक्शनों में से एक है। यहां देश के चार मुख्य रेल मार्ग- उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम इस तरह एक-दूसरे को काटते हैं कि ऊपर से देखने पर पटरियां हीरे के आकार की नजर आती हैं। इसी वजह से

इसे 'डायमंड क्रॉसिंग' कहा जाता है। भारत में ऐसा एकमात्र रेलवे पॉइंट यहीं है, जहां चारों दिशाओं की ट्रेनें एक ही स्थान पर आकर एक-दूसरे को क्रॉस करती हैं फिर भी कोई टक्कर नहीं होती। यह नजारा इतना अद्भुत होता है कि रेलवे प्रेमी और सफर करने वाले लोग इसे देखने खास तौर पर नागपुर पहुंचते हैं।

नागपुर से गुजरने वाले प्रमुख रूट हैं-

. मुंबई-हावड़ा लाइन (पश्चिम से पूर्व दिशा)
. दिल्ली-चेन्नई लाइन (उत्तर से दक्षिण दिशा)
. काजीपेट-नागपुर लाइन
. नागपुर-इटारसी लाइन

इन मार्गों पर राजधानी एक्सप्रेस, दुरंतो, गरीब रथ, मेल और सुपरफास्ट ट्रेनें रोजाना चलती हैं। हर दिन हजारों ट्रेनें इस डायमंड क्रॉसिंग से होकर गुजरती हैं। इतना ट्रैफिक होने के बावजूद यहां सब कुछ बड़ी अच्छे और सुरक्षा के साथ होता है। यहां सब इतने सहज तरीके से होता है की आज तक इस रूट पर कोई टक्कर भी नहीं हुई है। अब सबसे बड़ा सवाल यही है जब चारों दिशाओं से ट्रेनें आती हैं, तो हादसा क्यों नहीं होता? इसका सीधा-साधा जवाब है रेलवे का इंटरलॉकिंग सिस्टम और ऑटोमैटिक सिग्नलिंग टेक्नोलॉजी। यह सिस्टम इस तरह काम करता है कि एक समय में केवल एक ट्रेन को क्रॉसिंग पार करने की अनुमति मिलती है। जैसे ही एक ट्रेन क्रॉसिंग पार कर लेती है, सिग्नल अपने आप अगली ट्रेन के लिए एक्टिव हो जाता है। इस तकनीक की वजह से ट्रेनों की आवाजाही पूरी तरह से कंट्रोल में रहती है और दुर्घटना की संभावना एकदम ही शून्य हो जाती है।

नागपुर का यह 'डायमंड क्रॉसिंग' भारतीय रेलवे की तकनीकी एफिशिएंसी और इंजीनियरिंग के अद्भुत संतुलन का प्रतीक है। यहां हर पल ट्रेनों की मूवमेंट पर नजर रखी जाती है।

मोदी व शाह झूठ बोलने में नहीं हिचकिचाते : खरगे

चुनावी सभा में देरी का ठीकरा पीएम मादी पर फोड़ा

» कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा- सुरक्षा कारणों से मुझे दो घंटे तक बैठाकर रखा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रोहतास। रोहतास के चेनारी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत नौहट्टा में आयोजित एक जनसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे निर्धारित समय से करीब 3 घंटे विलंब से पहुंचे। भाषण के शुरुआत में खरगे ने चेनारी विधानसभा की जनता से विलंब से आने के लिए माफी मांगते हुए इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने बताया कि एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुरक्षा कारणों से मुझे दो घंटे बैठाया गया, जिससे मुझे आने में देरी हुई।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे नौहट्टा बीआरसी मैदान में महागठबंधन की चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा कि पीएम मोदी झूठ बोलने में हिचकिचाते नहीं हैं और उनके मित्र अमित शाह भी उन्हीं की तरह हैं। खरगे ने कहा कि मोदी जी ने कहा था कि किसानों को हर साल दो करोड़ रुपये देंगे। क्या दिया? नहीं। उन्होंने कहा था कि गरीबों को एक करोड़ घर देंगे। क्या दिया? नहीं। कांग्रेस अध्यक्ष ने आगे कहा कि एनडीए सरकार ने बिहार की जनता से किए वादे पूरे नहीं किए, लेकिन इंडिया गठबंधन उन्हें पूरा करेगा। इतना ही नहीं खरगे ने आगे कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी पंचायत चुनाव से लेकर एमपी एमएलए के सभी चुनावों में घूमते रहते हैं। इनका काम सिर्फ देश-विदेश घूमने एवं चुनाव प्रचार का है। देश हित में कोई काम नहीं करते। इनके पास देश के बारे में सोचने के लिए एक घंटा भी समय नहीं है। इनके अधिकारी फाइल भेजते हैं और मोदी उस पर साइन करते हैं। खरगे ने सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगाते हुए कहा कि मोदी ने हर खाते में 15 लाख, हर साल 2 करोड़ नौकरियां, किसानों को दोगुना एमएसपी देने का वादा किया, लेकिन सब झूठ निकला। गैस के दाम दोगुने होने से महिलाएं अब परेशान हैं। उन्होंने नीतीश कुमार पर भी हमला बोला और कहा कि नौ बार मुख्यमंत्री बने, लेकिन बिहार में पलायन और बेरोजगारी जस की तस है। बिहार के लोग आज भी रोज़गार के लिए गोवा, मुंबई, गुजरात जाने को मजबूर हैं।

बिहार में पलायन और बेरोजगारी यथावत

ऑपरेशन के बाद भी संविधान बचाने के लिए मैदान में उतरा

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि मेरे हृदय का ऑपरेशन हुआ है, लेकिन फिर भी मैं आया हूं, क्योंकि हमें लोकतंत्र और स्वतंत्रता को बचाना है। उन्होंने महागठबंधन के उम्मीदवार मंगल राम को जिताने की अपील करते हुए कहा कि कैंडिडेट मंगल राम का मंगल करना आपके हाथ में है। जनसभा के दौरान राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल, कृष्णा अल्लावारू, रामकृष्ण ओझा, सांसद मनोज राम, शैलेश पांडेय, अजीत तिवारी, सुभद्रा सिंह, देवेंद्र यादव, उदय सिंह, विद्यापाल यादव, रामनाथ मिश्रा, अयोध्या प्रसाद, सुरेंद्र यादव, दिनेश प्रसाद, वीरेंद्र तिवारी सहित कई नेता मौजूद रहे।

ममता सरकार वोट बैंक के लिए घुसपैठियों को दे रही संरक्षण : शुभेंदु

» बोले- सरकार बीएसएफ को स्थायी बाड़ लगाने के लिए पर्याप्त जमीन नहीं दे रही है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के नेता प्रतिपक्ष और भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने शनिवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनकी सरकार पर वोट बैंक की राजनीति के लिए बांग्लादेशी घुसपैठियों को बचाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा स्थायी बाड़ लगाने के लिए बीएसएफ को ज़मीन देने से इनकार करने के कारण लगभग 540 किलोमीटर सीमा पर बाड़ नहीं लगी है। शुभेंदु ने कहा कि जिसकी वजह से घुसपैठिए, ख़ासकर बांग्लादेशी मुसलमान, पश्चिम बंगाल की सीमा से आ रहे है।

अधिकारी ने कहा कि लाखों घुसपैठिए राज्य में घुस रहे हैं और कहा कि उन्हें पता लगाया जाना चाहिए, हटाया जाना चाहिए और निर्वासित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि लाखों बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठिए, जो भारतीय नहीं हैं, आ रहे हैं। ममता बनर्जी और उनकी सरकार उन्हें संरक्षण दे रही है। वोट बैंक की राजनीति के कारण, ममता बनर्जी और उनकी पुलिस उन्हें संरक्षण दे रही है। हम उनका पता लगाना, उन्हें हटाना और निर्वासित करना चाहते हैं। इससे पहले गुरुवार को, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के लिए गणना फ़ॉर्म स्वीकार करने के किसी भी दावे को खारिज कर दिया।

एसआईआर से बच्चों का भविष्य खतरे में : सिंघार

» सर्वे में शिक्षकों को झोंकने पर बवाल,नेता प्रतिपक्ष बोले- स्कूल बंद होने की नौबत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश में वोटर लिस्ट के एसआईआर की शुरुआत होते ही बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। 4 नवंबर से प्रदेश के 65 हजार बीएलओ घर-घर जाकर वोटर्स की जानकारी इकट्ठा कर रहे हैं, लेकिन इनमें से 15 हजार से ज्यादा शिक्षक होने पर नई बहस छिड़ गई है। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने सरकार पर सीधा हमला बोलते हुए कहा कि शिक्षक कमी से जूझ रहे स्कूलों के बीच हजारों शिक्षकों को एसआईआर में भेजना प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को ठप करने जैसा है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि प्रदेश में 6 हजार से ज्यादा स्कूल ऐसे हैं जो एक या दो शिक्षकों के सहारे चल रहे हैं।

यदि इनमें से भी आधे शिक्षकों को बीएलओ बना दिया गया, तो स्कूलों में ताले लगने जैसी स्थिति बन सकती है। कई जगह तो प्राचार्य और प्रभारी प्राचार्य तक को एसआईआर की ड्यूटी में लगा दिया गया है। बोर्ड परीक्षाएं सिर पर, साइंस मैथ्स टीचर्स भी चुनावी काम में उन्होंने ने कहा कि 12वीं कक्षा को गणित और विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों को भी एसआईआर में शामिल कर लिया गया है, जबकि यह नियमों के खिलाफ माना जाता है। सबसे चौंकाने वाली बात एसआईआर का अंतिम प्रकाशन 7 फरवरी 2026 को होगा, उसी दिन एमपी बोर्ड की परीक्षाएं शुरू हो रही हैं। नीमच में बीएलओ बनाए गए पांच शिक्षक जब स्कूल पढ़ाने लौटे, तो उन्हें निर्वाचन कार्य में लापरवाही का दोषी मानते हुए तुरंत निलंबित कर दिया गया। इस घटना के बाद शिक्षकों में नाराजगी और तनाव दोनों बढ़ गया है। शिक्षक संगठनों का कहना है कि यह फैसला सीधा-सीधा बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ है।

आयोग के धोखा देने की कोशिशों को माफ नहीं करेगी जनता

» प्रियंका ने सीईसी ज्ञानेश कुमार को दी चेतावनी, शांति से रिटायर नहीं होंगे आप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार विधानसभा चुनाव की सरगर्मी के बीच राज्य में राजनीतिक तनाव बढ़ गया है। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने रेगा में एक रैली के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार और दो अन्य अधिकारियों पर खुलेआम निशाना साधा। मंच पर प्रियंका गांधी ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि ज्ञानेश कुमार, अगर आप सोचते हैं कि आप शांति से रिटायर हो जाएंगे, तो ऐसा नहीं होगा। मैं जनता से कहती हूं, ज्ञानेश कुमार का नाम कभी मत भूलना।

उन्होंने एस.एस. संधू और विवेक जोशी का भी नाम लिया और जनता से उनके नाम याद रखने की अपील की, जिस पर उनके समर्थकों ने चोर-चोर के नारे लगाए। प्रियंका गांधी ने कथित मतदान अनियमितताओं की आलोचना की और हरियाणा में कथित तौर पर वोटों से छेड़छाड़ का जिक्र किया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि जनता उन्हें धोखा देने की कोशिशों को माफ़ नहीं करेगी। उन्होंने अपनी चेतावनी दोहराते हुए कहा कि ज्ञानेश कुमार, एस.एस. संधू और विवेक जोशी सहित इसमें शामिल लोगों को, अगर लगता है कि गलत कामों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, तो उन्हें चैन से सो जाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इससे पहले, राहुल गांधी ने भी चुनाव आयोग पर निशाना साधते हुए दावा किया था कि 2024 के हरियाणा विधानसभा चुनावों के दौरान नतीजों में हेरफेर करने के लिए 25 लाख फर्जी वोटों का इस्तेमाल किया गया था।

प्रियंका की टिप्पणी की विरोधियों ने की आलोचना

प्रियंका गांधी की टिप्पणी की राजनीतिक विरोधियों ने आलोचना की है और चल रही चुनावी प्रक्रिया के दौरान राजनीतिक भाषण की सीमाओं और चुनाव अधिकारियों को धमकाने के औचित्य पर सवाल उठाए हैं। बिहार में चुनाव पूरे जोरों पर हैं, ऐसे में यह विवाद आने वाले दिनों में सुर्खियों में रहने की संभावना है।

बीजेपी-पीडीपी की दोस्ती अब भी बरकरार : उमर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बडगाम में रोड शो के दौरान कहा कि जम्मू-कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के बीच दोस्ती अभी भी बरकरार है। उन्होंने नागरिकों को स्पष्ट किया कि अगर वे स्मार्ट मीटर लगाने के लिए अनिच्छुक हैं तो इसे लगवाने की बाध्यता नहीं है। लेकिन इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि स्मार्ट मीटर न लगाने की स्थिति में घोषणापत्र में दिए गए 200 मुफ्त यूनिट का लाभ नहीं मिलेगा।

वहीं, वंदे मातरम विवाद पर उमर अब्दुल्ला ने कहा कि इस निर्णय पर शिक्षा मंत्री के हस्ताक्षर नहीं हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि स्कूलों में क्या होना चाहिए और क्या नहीं, यह सिर्फ प्रशासन का निर्णय होगा और बाहरी लोगों द्वारा इसमें कोई हस्तक्षेप या निर्देश नहीं दिया जाना चाहिए।

महिला वनडे विश्वकप 2029 में 10 टीमें लेंगी हिस्सा

» रिकार्ड 4.6 करोड़ दर्शकों ने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर देखा महिला विश्वकप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने महिला वनडे विश्व कप 2029 को लेकर बड़ा फैसला लिया है। अब इस टूर्नामेंट में आठ नहीं 10 टीमें हिस्सा लेंगी। बता दें कि, हाल ही में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को फाइनल में 52 रनों से हराकर महिला वनडे विश्व कप 2025 का खिताब अपने नाम किया था। यह भारतीय महिला टीम का पहला खिताब है। आईसीसी ने अपने बयान में कहा कि बोर्ड ने हाल ही में हुए टूर्नामेंट की जबरदस्त सफलता को देखते हुए अगले संस्करण में टीमों की संख्या बढ़ाने का फैसला किया है।

आईसीसी ने कहा, करीब 3 लाख दर्शकों ने स्टेडियम में आकर इस आयोजन को देखा, जो किसी भी महिला क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए अब तक की सबसे बड़ी दर्शक संख्या है। इस टूर्नामेंट ने टीवी और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी नए रिकॉर्ड बनाए, जिसमें सिर्फ भारत में लगभग 50 करोड़ दर्शकों ने इसे देखा। आईसीसी का मानना है कि इस लोकप्रियता और महिला क्रिकेट के तेजी से बढ़ते प्रभाव को देखते हुए, विश्व कप को और बड़ा करने का यह सही समय है।(आईसीसी महिला वनडे विश्व कप में भारत की ऐतिहासिक खिताबी जीत ने देश में क्रिकेट प्रसारण के लिए नए मानक स्थापित किए और आधिकारिक प्रसारक के अनुसार कुल 44.6 करोड़ दर्शकों ने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर यह टूर्नामेंट देखा। जियोहॉटस्टार ने कहा कि फाइनल को उसके प्लेटफॉर्म पर 18.5 करोड़ उपयोगकर्ताओं ने देखा। यह पिछले साल भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच हुए पुरुष टी20 विश्वकप फाइनल के दौरान दर्ज किए गए दर्शकों की संख्या के बराबर थी। प्रसारक ने कहा कि 44.6 करोड़ दर्शकों की संख्या महिला क्रिकेट के लिए अब तक की सबसे अधिक और पिछले तीन महिला विश्व कप के कुल योग से भी अधिक है। इसमें कहा गया, यह भारत में महिला क्रिकेट दर्शकों के विकास में एक मील का पत्थर है।

ओलंपिक 2028 में होगी क्रिकेट की वापसी

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) की अध्यक्ष क्रिस्टी कोवेंट्री ने कहा कि ओलंपिक कार्यक्रम में क्रिकेट की वापसी से भारत और ओलंपिक आंदोलन के बीच संबंध और मजबूत होंगे। उन्होंने उम्मीद जताई कि लॉस एंजिलिस ओलंपिक 2028 में इस खेल के शामिल होने से भारतीय दर्शकों की दिलचस्पी और बढ़ेगी। कोवेंट्री ने कहा, लॉस एंजिलिस ओलंपिक 2028 में क्रिकेट की वापसी से यह रिश्ता और मजबूत होगा, जिससे खेलों का जादू भारतीय प्रशंसकों के दिलों के और भी करीब पहुंचेगा। पूर्व तैराक और सात बार की ओलंपिक पदक विजेता कोवेंट्री ने यह भी बताया कि आईओसी वर्तमान में भारत में ओलंपिक प्रसारण अधिकारों के लिए मीडिया साझेदार चुनने की प्रक्रिया में है। उन्होंने कहा, भारत में हम वर्तमान में मीडिया अधिकारों के लिए एक खुली निविदा प्रक्रिया आयोजित कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य इस असाधारण देश के हर कोने में ओलंपिक खेलों का जादू पहुंचाने के लिए सही साझेदार ढूंढना है।

बिहार चुनाव : दूसरे चरण में 122 सीटों पर दांव, दलों ने जमाए पांव

» नीतीश-तेजस्वी की किस्मत का होगा फैसला

» प्रचार में आई तेजी, राजद व महागठबंधन में तीखी रार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 का दूसरा चरण अब बस कुछ ही दिनों दूर है। पहले चरण की 121 सीटों पर मतदान के बाद अब 11 नवंबर को 18 जिलों की 122 सीटों पर 1302 उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला मतदाता करेंगे। राजनीतिक दलों ने इन सीटों पर पूरी ताकत झोंक दी है और प्रचार-प्रसार अपने चरम पर है।

दूसरे चरण में 18 जिलों की 122 सीटों पर मतदान होगा। इसमें गयाजी जिले की 10, कैमूर की 4, रोहतास की 7, औरंगाबाद की 6, अरवल की 2, जहानाबाद की 3, नवादा की 5, भागलपुर की 7, बांका की 5, जमुई की 4, सीतामढ़ी की 8, शिवहर की 1, मधुबनी की 10, सुपौल की 5, पूर्णिया की 7, अररिया की 6, कटिहार की 7 और किशनगंज की 4 सीटों के साथ-साथ पूर्वी चंपारण की 12 और पश्चिमी चंपारण की 9 विधानसभा सीटें शामिल हैं।

दूसरे चरण में यूपी की सीमा से सटे सीमांचल के इलाकों से लेकर चंपारण बेल्ट और मिथिलांचल की सीटों तक मतदान होगा। पहले चरण में एनडीएकी साख पर नीतीश कुमार और जीतनराम मांझी की परीक्षा थी, वहीं दूसरे चरण में बीजेपी का असली इम्तिहान माना जा रहा है। महागठबंधन में राजद और कांग्रेस को अपनी ताकत साबित करनी है, जबकि असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी के लिए सीमांचल में अपनी साख बचाना चुनौतीपूर्ण होगा। 2020 में ओवैसी ने इसी चरण की सीटों पर जीत हासिल कर सभी को चौंकाया था। मिथिलांचल और सीमांचल में भी कुल 55 सीटों पर मतदान होगा।

सीतामढ़ी, शिवहर, मधुबनी, सुपौल, पूर्णिया, अररिया, कटिहार और किशनगंज की सीटें इन क्षेत्रीय मतदाताओं के लिए निर्णायक होंगी। चंपारण बेल्ट की पूर्वी और पश्चिमी चंपारण की 21 सीटें भी इस चरण में शामिल हैं।

एनडीए की राह आसान नहीं

इस चरण में एनडीए की चुनौती सबसे बड़ी है, खासकर बीजेपी को अपनी सीटों को बचाने का दबाव है। वहीं जितन राम मांझी और चिराग पासवान को भी अपने मजबूत इलाके में खुद को साबित करना है। महागठबंधन के लिए राजद और कांग्रेस की कोशिश होगी कि वे सत्ता में वापसी के संकेत दिखाएं।। महागठबंधन के पास इन सीटों पर 2020 में 66 में से 50 सीटें थीं, जबकि बीजपी ने 42 सीटें, जदयू ने 20 और एमजीपी/जितनराम मांझी की पार्टी ने चार सीटें जीती थी।

ओवैसी और अन्य क्षेत्रीय दल की भी पैठ

असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम ने सीमांचल में पांच सीटें जीतकर अपने प्रभाव को मजबूत किया है और इस बार भी लगभग 19 सीटों पर उनकी नजर है, जहां मुस्लिम मतदाता 30प्रतिशत से अधिक हैं। अन्य दल जैसे सीपीआई-माले, बसपा और निर्दलीय उम्मीदवार भी इस चुनाव में भाग ले रहे हैं।

प्रचार अभियान में आई तेजी

राजनीतिक दलों ने इस चरण के लिए प्रचार अभियान तेज कर दिया है। महागठबंधन ने मुख्य रूप से सीमांचल और मिथिलांचल की सीटों पर फोकस किया है, जबकि एनडीए ने यूपी-सीमा और चंपारण बेल्ट पर अपनी ताकत दिखाई है। वोटिंग के दिन सुरक्षा और चुनाव प्रक्रिया को व्यवस्थित बनाने के लिए प्रशासन ने भी विशेष इंतजाम किए हैं।

पुणे जमीन घोटाले में गहराया विवाद

» पार्थ पवार पर विपक्ष का हमला, अजित पवार ने बेटे का किया बचाव

» सीएम बोले किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा उच्च-स्तरीय जाँच के आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। पुणे में मुंधवा नामक स्थान पर सरकारी संपत्ति की अवैध बिक्री से संबंधित भूमि सौदे के बाद महाराष्ट्र और उसके बाहर उपमुख्यमंत्री अजीत पवार के बेटे पार्थ पवार को लेकर राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया, जिसके बाद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घोषणा की है कि किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा, हालांकि एफआईआर में स्पष्ट रूप से पार्थ का नाम नहीं है।

फडणवीस ने नागपुर में कहा, जो लोग यह भी नहीं समझते कि एफआईआर (प्रथम सूचना रिपोर्ट) क्या होती है, वही लोग बेबुनियाद आरोप लगा रहे हैं। जब एफआईआर दर्ज होती है, तो वह संबंधित पक्षों के खिलाफ दर्ज की जाती है। इस मामले में, कंपनी और उसके अधिकृत हस्ताक्षरकर्ताओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

विपक्षी शिवसेना (यूबीटी) और कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि शीर्ष स्तर पर मिलीभगत के कारण कथित तौर पर 1,800 करोड़ रुपये की कीमत वाली जमीन का कागजों में कम मूल्यांकन किया गया और इसे पार्थ पवार के स्वामित्व वाली अमेडिया एंटरप्राइजेज को 300 करोड़ रुपये में बेच दिया गया, जिसमें स्टांप शुल्क की छूट दी गई, जबकि 21 करोड़ रुपये की छूट मिलनी चाहिए थी।

विवादास्पद सौदा अब रद्द हो चुका है : अजित पवार

पुणे में अपने बेटे द्वारा कथित तौर पर सरकारी ज़मीन खरीदने को लेकर उठे विवाद के बीच, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने अपने बेटे पार्थ का बचाव करते हुए कहा कि उन्हें और उनके बिज़नेस पार्टनर को इस बात की जानकारी नहीं थी कि उनकी कंपनी ने जो ज़मीन खरीदी है, वह राज्य की है। उन्होंने आगे कहा कि यह विवादास्पद सौदा अब रद्द हो चुका है। एनसीपी नेता की यह टिप्पणी 40 एकड़ के एक भूखंड के अधिग्रहण में कम मूल्यांकन, प्रक्रियागत अनियमितताओं और राजनीतिक प्रभाव के दुरुपयोग के आरोपों के बीच आई है। यह ज़मीन, जो सरकार की थी, कथित तौर पर अमेडिया एंटरप्राइजेज को लगभग 300 करोड़ रुपये में बेची गई थी, जिसमें पार्थ एक साझेदार हैं, जबकि इसका वास्तविक बाजार मूल्य लगभग 1,800 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। विवाद गहराने पर, उच्च-स्तरीय जाँच के आदेश दिए गए हैं और बिक्री विलेख में शामिल अन्य व्यक्तियों, जिनमें खरीदार फर्म के एक अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता और एक निलंबित उप-पंजीयक शामिल हैं, के खिलाफ कथित गबन, धोखाधड़ी और स्टाम्प शुल्क की चोरी के आरोप में प्राथमिकी दर्ज की गई है।

ट्रिपल इंजन की सरकार में खींचतान, जनता परेशान

» महापौर और अधिकारियों में टकराव से विकास कार्य प्रभावित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। स्मार्ट सिटी की समीक्षा बैठक में महापौर के बुलावे पर पहुंचे प्रभारी मंत्री सुरेश खन्ना की मौजूदगी में पार्षदों से लेकर विधायक तक शामिल हुए। बैठक में विकास कार्यों में हो रही देरी को लेकर तीखी चर्चा रही। बीकेटी विधायक योगेश शुक्ला ने सड़क निर्माण कार्य निरस्त किए जाने पर नाराजगी जताते हुए कहा कि उन्होंने इस संबंध में महापौर को पत्र लिखा था, लेकिन उसके बाद भी कार्य रोक दिया गया।

इसी तरह कई पार्षदों ने भी शिकायत की कि उनके वार्डों में लंबे समय से कार्य नहीं हो रहे, जिससे उनमें रोष व्याप्त है। उधर, नगर आयुक्त और महापौर के बीच बढ़ती खींचतान भी खुलकर सामने आई। शुक्रवार को नगर निगम के त्रिलोकीनाथ हाल में आयोजित समाधान दिवस में नगर आयुक्त और अपर नगर आयुक्त अनुपस्थित रहे। केवल अपर नगर आयुक्त अरुण कुमार गुप्ता और ललित कुमार पहुंचे। महापौर ने गृहकर वसूली को लेकर अधिकारियों को फटकार लगाई, जिस पर असहज माहौल बन गया और ललित कुमार बीच में ही बैठक छोड़कर चले गए। नगर निगम के भीतर इस टकराव का सीधा असर शहर के विकास कार्यों पर पड़ रहा है। अधिकारी/जनप्रतिनिधि की इस लड़ाई में जनता को परेशानी और विकास में रुकावट का सामना करना पड़ रहा है।

समाधान दिवस में मेयर का कड़ा रुख, अनुपस्थित अधिकारियों से मांगा स्पष्टीकरण

नगर निगम मुख्यालय में आयोजित समाधान दिवस के दौरान मेयर ने अधिकारियों की अनुपस्थिति पर नाराजगी जताई। उन्होंने साफ कहा कि जो अधिकारी नहीं आए हैं, उनके लिए नगर आयुक्त जिम्मेदार हैं। अनुपस्थित अधिकारी अपना स्पष्टीकरण दें। समाधान दिवस में भारी संख्या में जनता अपनी शिकायतें लेकर पहुंची, लेकिन कई संबंधित अधिकारी मौजूद नहीं थे। इससे मेयर भड़क गईं और कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान हमारी प्राथमिकता है, लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। हाउस टैक्स में भारी वृद्धि की गई है।

यूपी के शामली में खड़े ट्रक से टकरायी कार, चार की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शामली। शामली जिले के बाबरी क्षेत्र में बंती खेड़ा पुल के पास पानीपत-खटीमा राजमार्ग पर एक कार के खड़े ट्रक से जा टकराने से हरियाणा के सोनीपत निवासी चार लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी।

अपर पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह ने यहां संवाददाताओं को बताया कि बाबरी क्षेत्र में बंती खेड़ा पुल के पास पानीपत-खटीमा राजमार्ग पर एक तेज रफ्तार कार खड़े ट्रक से जा टकरायी। उन्होंने बताया कि इस घटना में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों की पहचान हरियाणा के सोनीपत जिले के विवेक (26), प्रणदीप (30), आशीष (28) और साहिल (25) के रूप में हुई है।

1 दिसंबर से शुरू होगा संसद का शीतकालीन सत्र, 19 तक चलेगा

» केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री बोले- राष्ट्रपति ने दी मंजूरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने शनिवार को घोषणा की कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 1 दिसंबर से 19 दिसंबर, 2025 तक संसद का शीतकालीन सत्र बुलाने के सरकार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

रिजिजू ने एक बयान में कहा कि एक रचनात्मक और सार्थक सत्र की आशा है जो हमारे लोकतंत्र को मजबूत करेगा और लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करेगा। आगामी सत्र में प्रमुख विधायी कार्यों तथा नए वर्ष से पहले राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा पर ध्यान केंद्रित किए जाने की उम्मीद है। एक्स पर इस घटनाक्रम की घोषणा करते हुए, केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा, भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 1 दिसंबर 2025 से 19 दिसंबर 2025 तक (संसदीय कार्य की अनिवार्यताओं के अधीन) संसद का शीतकालीन सत्र बुलाने के सरकार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। हम एक रचनात्मक और सार्थक सत्र की आशा करते हैं जो हमारे लोकतंत्र को मज़बूत करे और लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करे।

जी-20 शिखर सम्मेलन से ट्रंप के हटने पर मोदी पर प्रहार

कांग्रेस ने कसा तंज- खुद को विश्वगुरु बताने वाले व्यक्ति स्वयं हिस्सा लेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दक्षिण अफ्रीका में इसी महीने होने वाले जी20 शिखर सम्मेलन से किनारा करने का एलान किया है, लेकिन कांग्रेस इसको लेकर भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साध रही है।

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने शनिवार को एक्स पर एक पोस्ट लिखकर बिना नाम लिए पीएम मोदी पर यह कहकर तंज कसने की कोशिश की है कि ट्रंप की घोषणा के बाद निश्चित तौर पर प्रधानमंत्री जी20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने जाएंगे। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने ट्रंप की ओर से जी20 शिखर

सम्मेलन में नहीं जाने की घोषणा के बाद अपने पोस्ट में लिखा है, अब जब राष्ट्रपति ट्रंप ने यह घोषणा कर दी है कि 22-23 नवंबर को दक्षिण अफ्रीका में होने वाले जी20 समिट में वह शामिल नहीं होंगे...तो हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि खुद को विश्वगुरु बताने वाले व्यक्ति स्वयं हिस्सा लेंगे।...कभी न कभी..कहीं न कहीं। कांग्रेस नेता के बयान से लगता है कि पीएम मोदी, ट्रंप का सामना करने से बच रहे हैं। इससे पहले जब प्रधानमंत्री ने कुआलालंपुर में 47वें आसियान शिखर सम्मेलन को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए संबोधित किया था तो भी जयराम रमेश ने आरोप लगाया था कि वह ट्रंप का सामना करने से बच रहे हैं। जबकि, हमारी रिपोर्ट में पहले ही (शुक्रवार, 7 नवंबर,2025) बताया गया था कि पीएम मोदी जी20 शिखर सम्मेलन में शामिल हो सकते हैं और ग्लोबल साउथ वाले एजेंडे के मद्देनजर वह कुछ और अफ्रीकी देशों की यात्रा भी कर सकते हैं।

स्वामी 4 पीएम न्यूज़ नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार : सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार : संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट : हसन जैदी, दूरभाष : 0522- 4078371 । Email : daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in । RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।